Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

> एक नर पंडित प्रवीण,
> एकण ने अखर ना चढ़े।
>
> एक आदमी पण्डित और प्रवीण है। एक ऐसा है जो अक्षर भी याद नहीं कर पाता।
>
> – आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 26 • अंक 41 • 14 जुलाई - 20 जुलाई, 2025 | प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 12-07-2025 • पेज 20 | ₹ 10 रुपये

अहंकार और मान का विनम्रता से करें विलय : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

भौतिक इच्छाओं का परिसीमन करें, आध्यात्मिक विकास का नहीं : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 18

Address Here

लोक में सबसे उत्कृष्ट मंगल है अहिंसा, संयम और तप रुपी धर्म : आचार्यश्री महाश्रमण

■ प्रेक्षा विश्व भारती में हुआ तेरापंथ सरताज का चातुर्मासिक प्रवेश

■ राजनीतिक आचार्य ने किया आध्यात्मिक आचार्य का अभिनंदन

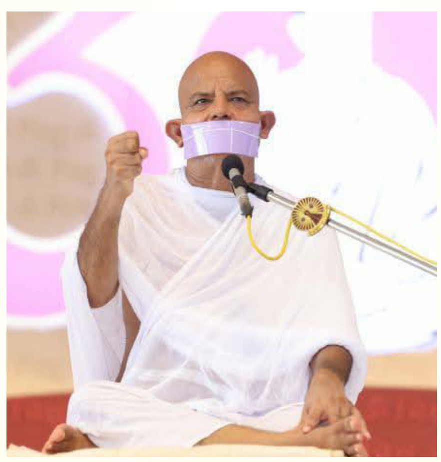

कोबा, गांधीनगर।
6 जुलाई, 2025

गुजरात की धरा पर लगातार दूसरे चतुर्मास एवं आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष शुभारंभ के लिए, गुजरात की राजधानी गांधीनगर में स्थित कोबा के प्रेक्षा विश्व भारती प्रांगण में, विशाल जनमेदिनी की उपस्थिति में तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपनी धवल सेना के साथ प्रातः लगभग 9:31 बजे मंगल प्रवेश किया।

साधु-साध्वीवृंद, मुमुक्षु एवं समण श्रेणी की श्रृंखला के मध्य गतिमान आचार्यश्री के ज्योतिचरण जब प्रेक्षा विश्व भारती परिसर में पहुँचे, तो पूरा वातावरण जयघोषों से गूंज उठा। यह वही भूमि थी जहाँ 2002 में आचार्य महाप्रज्ञजी का चातुर्मास संपन्न हुआ था। अब 23 वर्षों बाद उनके परंपरागत उत्तराधिकारी उसी स्थान पर चातुर्मास हेतु पदार्पण कर रहे थे।

परिसर के वीर भिक्षु समवसरण में विशाल सभा को आर्हत वाणी की अमृतवर्षा कराते हुए युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया—

"धम्मो मंगल मुक्किट्ठं, अहिंसा संजमोतवो।

देवावि तं नमं सन्ति, जस्स धम्मे सयामणो।।"

व्यक्ति मंगलभावना करता है — अपने लिए भी, और दूसरों के लिए भी। उसके लिए प्रयास भी करता है। कभी-कभी कुछ वस्तुओं को भी मंगल मानकर ग्रहण भी करता है। शास्त्रों में बहुत बड़ी बात कही गई है कि सबसे बड़ा मंगल क्या है? बताया गया है कि धर्म सबसे बड़ा मंगल है। परंतु फिर प्रश्न उठता है — कौन-सा धर्म? तो उत्तर प्राप्त होता है — अहिंसा, संयम और तप। यही उत्कृष्ट मंगल है।

सभी प्राणियों को अपने समान समझो — जैसे मुझे दुःख प्रिय नहीं है, वैसे ही दूसरों को भी दुःख प्रिय नहीं हो सकता। जैसे मुझे सुख अच्छा लगता है, वैसे ही सबको। सबको अपने समान समझना अहिंसा की भावना है। साधु के तो तीन करण — मन, वचन, और काय से आजीवन हिंसा का त्याग होता है।

"तन कर, मन कर, वचन कर, देत न काहू दुःख।

तुलसी पातक झरत है, देखत वा को मुख।।"

गृहस्थ भी अहिंसा के मार्ग पर चले। अनावश्यक हिंसा से बचे। साधु की अहिंसा तो बहुत उच्च कोटि की होती है — मन, वचन और शरीर पर नियंत्रण रखते हुए संयम और तप की आराधना करते हैं। यदि कोई दोष लग जाए तो प्रायश्चित से शुद्धि हो सकती है।

पूज्य प्रवर ने आगे कहा— आज हम अहमदाबाद के चातुर्मास स्थल में प्रवेश कर चुके हैं। संत परंपरा में चातुर्मास के चार महीने अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। चातुर्मास में स्थिरता, अध्ययन, आराधना, ध्यान और सेवा का विशेष वातावरण बनता है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने भी वर्ष 2002 का चातुर्मास यहीं किया था।

हम तेरापंथ धर्मसंघ से जुड़े हैं। इसके आद्य प्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु स्वामी हुए हैं। उनके द्वारा शुरू की गई परंपरा आज तक चल रही है। आज गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी का समागम भी हुआ है। जो मनीषी होते हैं, वे धर्म परंपरा से जुड़े होते हैं। उनकी वाणी उपदेशात्मक और ज्ञानवर्धक होती है।

प्रवास व्यवस्था समिति सेवा के क्षेत्र में सराहनीय कार्य कर रही है। हमें प्रेक्षा विश्व भारती का यह परिसर चातुर्मास हेतु मिला है। वर्ष 2002 में जब भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलामजी यहां पधारे थे, वह भी एक ऐतिहासिक क्षण था। राजनीति से भी जनसेवा की जा सकती है।

यह वर्ष प्रेक्षा कल्याण वर्ष और आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष है, जो भिक्षु चेतना वर्ष के रूप में मनाया जाएगा। हम सब धर्म, तप और ज्ञान की आराधना को निरंतर बनाए रखें। मंगल प्रवेश के अवसर पर साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि शास्त्रों में चार दुर्लभताओं का उल्लेख मिलता है — मनुष्य जन्म, धर्म श्रवण, श्रद्धा और संयम में पराक्रम।

(शेष पेज 17 पर)

अहंकार और मान का विनम्रता से करें विलय : आचार्यश्री महाश्रमण

महावीर आराधना केन्द्र, अहमदाबाद।
5 जुलाई, 2025

भगवान महावीर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ कोबा में ही स्थित महावीर आराधना केन्द्र में पधारे। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि वीतराग जैसे महान पुरुषों को छोड़ दें, तो बाकी प्रायः किसी न किसी रूप में अहंकार व्यक्ति में रहता ही है। व्यक्ति को कुछ मिल जाता है, तो उसका घमंड आ सकता है। व्यक्ति को विद्या और पांडित्य का भी घमंड हो सकता है। जो सर्वज्ञ हो गया, उसे घमंड नहीं होता।

विद्या विनय से शोभित होती है। ज्ञान का यथोचित उपयोग करना चाहिए। शक्ति है तो उसका भी सदुपयोग करें, घमंड न करें। सुंदर चेहरे और स्वस्थ शरीर का भी घमंड न करें। तपस्या का भी अहंकार न हो। किसी के पास सत्ता है, प्रभुत्व है तो उसके भी अहंकार से बचना चाहिए। सत्ता का प्राप्त होना किसी पुण्य का योग हो सकता है, तो उसका उपयोग सेवा में करें, न कि उसका घमण्ड करना चाहिए। धन के अहंकार से भी बचने का प्रयास करना चाहिए। पैसे में ज्यादा आसक्ति और मोह से भी बचने का प्रयास करना चाहिए। पैसे का दुरुपयोग करने से भी बचने का प्रयास करना चाहिए।

जीवन में यदि उत्कर्ष है, तो वह पूर्व की पुण्याई का फल है। आगे का चिंतन करें कि कहीं दुर्गति में न जाना पड़े। पुण्य अहंकार का कारण न बने। वैभव से आदमी घमण्ड की ओर चला जा सकता है। अहंकार एक दुराग्रह है। पुण्य होने पर भी संयम रखें। व्यक्तिगत जीवन में सादगी रहे। जितना संभव हो, जीवन में विनयवान बने रहने का प्रयास होना चाहिए।

आदमी को अपने अहंकार को मार्दव से जीतने का प्रयास करना चाहिए। परिवार, समाज, समुदाय कहीं भी अहंकार काम का नहीं होता है। आदमी को निरंहकारता का उपयोग करे और विनयवान बनने का प्रयास करना चाहिए।

नमस्कार करने से वात्सल्य बरसता है। खिंचाव से पतन हो सकता है। नम्रता से अहंकार की गांठ ढीली होती है। पहले स्वयं झुकेंगे, तो दूसरे भी झुकेंगे। हमें निरहंकारता का प्रयोग करना चाहिए।

पूज्यवर ने फरमाया - आज हमारा महावीर आराधना केन्द्र में आना हुआ है। हम प्रेक्षा विश्व भारती के पड़ोस में आ गए हैं। दोनों स्थानों पर धार्मिक और आध्यात्मिक साधना निरंतर चलती रहे।

महावीर आराधना केन्द्र की ओर से श्रीपालभाई ने आचार्यश्री के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। उन्होंने कुछ पुस्तकें आचार्यश्री को निवेदित की। आचार्यश्री ने उन्होंने मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

ईमानदारी के प्रति अडिग रहे आस्था : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
7 जुलाई, 2025

जिनशासन के सजग प्रहरी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने प्रेक्षा विश्व भारती के वीर भिक्षु समवसरण में पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि साधु के पांच महाव्रत होते हैं, और गृहस्थों के बारह व्रतों में पांच अणुव्रत होते हैं। महाव्रत और अणुव्रत में वस्तुतः सिद्धांत एक जैसे हैं, अंतर केवल अनुपात और सीमा का होता है।

पांच महाव्रतों में दूसरा महाव्रत है — सर्व मृषावाद विरमण, जबकि अणुव्रतों में इसका नाम है — स्थूल मृषावाद विरमण व्रत। मृषावाद (झूठ बोलना) अविश्वास का कारण बनता है, अतः इसे छोड़ना चाहिए। अठारह पापों में भी दूसरा पाप मृषावाद ही है। साधु को जब छेदोपस्थापनीय चारित्र ग्रहण कराया जाता है, तब सर्व मृषावाद का भी त्याग कराया जाता है। गृहस्थ भी स्थूल मृषावाद का परित्याग करें — यह अपेक्षित है।

ईमानदारी के तीन आयाम होते हैं — माया वर्जन, मृषा वर्जन, चोरी वर्जन।

साधु के लिए ये तीनों आयाम उच्चतम स्तर पर होने चाहिएं। कषाय शांत होने से मृषावाद विरमण की साधना सरल हो जाती है।

'वृत्त' और 'वित्त' दो शब्द हैं — वृत्त यानी चारित्र, वित्त यानी धन-पैसा। चारित्र की प्रयत्नपूर्वक रक्षा की जानी चाहिए। वित्त तो आता-जाता रहता है, पर वृत्त यानी चारित्र एक बार गया, तो फिर मिलना कठिन होता है। वृत्त अपने आप में एक महान संपत्ति है। छोटी संपत्ति (वित्त) के लिए बड़ी संपत्ति (वृत्त) को खो देना विचारणीय विषय है।

"साच बरोबर तप नहीं, झूठ बरोबर पाप।

जाके हिरदै साच है, ता हिरदै प्रभु आप।।"

जहां सच्चाई होती है, वहां प्रभुता आ सकती है। ईमानदारी के प्रति आस्था बनी रहनी चाहिए। आस्था एक बड़ी और स्थायी चीज होती है, और स्नेह व प्रेम से उसका घनिष्ठ संबंध होता है। भले ही कठिनाइयाँ आएं, पर ईमानदारी के प्रति हमारी आस्था अडिग रहे।

तीन मूल शब्द — ज्ञान, दर्शन और चारित्र — यदि एक साथ हों, तो चरित्र सहज बन जाता है। यदि ज्ञान के साथ दर्शन आ जाए, तो चारित्र स्वाभाविक रूप से विकसित होता है। जब ज्ञान के साथ अहिंसा के प्रति आस्था जाग जाए, और माया, मृषा, चोरी का वर्जन हो जाए, तो हम ईमानदारी को आचरण में ला सकते हैं। पूज्यवर की अभिवंदना में साध्वी साध्वी शकुन्तलाश्रीजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति देते हुए सहवर्ती साध्वियों के साथ गीत का संगान किया। साध्वी लब्धिश्रीजी ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। अभातेयुप के पूर्व महामंत्री हनुमान लुंकड़ व जसराज बुरड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम-अहमदाबाद के सदस्यों ने गीत का संगान किया। अहमदाबाद चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति ने स्वागत गीत का संगान किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

धर्म आराधना का महत्वपूर्ण समय है चातुर्मास

गंगाशहर।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के आज्ञानुवर्ती उग्र विहारी, तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी व मुनि श्रेयांस कुमार जी ठाणा-6 ने बोथरा भवन, गंगाशहर से विहार करके तेरापंथ भवन, गंगाशहर में चातुर्मासिक प्रवेश किया। इस अवसर पर अपना उद्बोधन प्रदान करते हुए उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी ने कहा कि चातुर्मास काल धर्म आराधना का महत्वपूर्ण समय होता है। वर्षावास काल में जीवों की अति उत्पत्ति होती है। पाप कार्यों से बचने के लिए और जीवों की हिंसा न हो, इस दृष्टि से चार माह एक ही स्थान पर रहकर साधना की जाती है। मुनिश्री ने कहा कि तेरापंथ के आचार्यश्री महाश्रमण जी युगीन समस्याओं को मिटाने के लिए निरंतर प्रयास करते रहते हैं। विवाह के कार्यक्रमों में अनेक नई बुराइयाँ जुड़ गई हैं। मुनिश्री ने कहा कि फूलों की होली बंद करनी चाहिए, क्योंकि इससे असंख्य जीवों की हिंसा होती है और निकाचित कर्मों का बंधन होता है, जिससे सम्यक्त्व बिगड़ता है। उन्होंने कहा, 'हिंसा की होली बंद करो, अहिंसा की साधना बढ़ाओ।' मुनिश्री ने आगे कहा, 'प्री-वेडिंग एक बहुत बड़ी बीमारी है, जो समाज का विनाश कर सकती है। बच्चों को इतनी खुली छूट मत दो, जिससे समाज का वातावरण खराब और दूषित हो। युवाओं को भोगी और विलासी नहीं, बल्कि आदर्श युवक बनाओ।'

मुनिश्री ने चातुर्मास काल में सामायिक, जप, तप, स्वाध्याय और ध्यान में अपना ज्यादा से ज्यादा समय लगाने की प्रेरणा प्रदान की। उन्होंने कहा कि घर-घर में अर्हत् वंदना हो तथा जप और उपवास का क्रम नियमित रूप से चालू रहना चाहिए। इस अवसर पर मुनि श्रेयांस कुमार जी ने एक गीतिका के माध्यम से अपने भाव व्यक्त किए। मुनिश्री के चातुर्मास प्रवेश एवं प्रवास के लिए स्वागत और मंगलकामनाओं के क्रम में जैन लूणकरण छाजेड़, अमरचंद सोनी, जतन लाल संचेती, गणेशमल बोथरा, आसकरण पारख, धर्मेंद्र डाकलिया, जतन लाल दूगड़, निर्मल बैद, ललित राखेचा, मनोहर लाल दूगड़, करणीदान रांका, राजेंद्र बोथरा, प्रेम बोथरा, किरण देवी छाजेड़, गरिमा भंसाली आदि वक्ताओं ने अपनी भावनाएँ प्रस्तुत कीं।

सेवा, शिक्षा और संवाद : तीन प्रेरणादायी आयोजनों से रचा नव इतिहास

हैदराबाद।

तेरापंथ युवक परिषद हैदराबाद ने तीन प्रभावशाली और बहुआयामी आयोजनों के माध्यम से सेवा, शिक्षा और संस्कार के क्षेत्रों में अपनी सक्रियता और सामाजिक प्रतिबद्धता का सशक्त परिचय दिया।

प्रथम आयोजन "आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल" परियोजना के अंतर्गत डीवी कॉलोनी स्थित तेरापंथ भवन में हैदराबाद शहर के पहले आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल्स की स्थापना का रहा। यह शुभारंभ साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के मंगलपाठ के पश्चात अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पवन मांडोत, जैन तेरापंथ वेलफेयर सोसायटी के चेयरमैन महेन्द्र भंडारी, जैन सेवा संघ के अध्यक्ष योगेश सिंघी, तेलंगाना AIJMF के अध्यक्ष हिमांशु बाफना, प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि परियोजना के प्रबंधक गोपु रमन्ना रेड्डी, अभातेयुप प्रोजेक्ट सह-प्रभारी अमित दक और शाखा प्रभारी कोमल डागा की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का संचालन मंत्री अनिल दुगड़ ने किया और आभार भी उन्होंने ही ज्ञापित किया। स्टोर की स्थापना में नौरतनमल नौलखा परिवार, अशोक हीरावत परिवार और उम्मेद दुगड़ परिवार का विशेष सहयोग रहा। स्टोर के इंटीरियर डिज़ाइन के लिए नमिता संचेती को सम्मानित किया गया। किशोर मंडल प्रभारी अरिहंत गुजरानी और संयोजक ऋषभ चिंडालिया के नेतृत्व में कई किशोरों ने सेवा दी, वहीं व्यवस्थाओं में चेतन मरलेचा, शुभम बंबोली, प्रांजल दुगड़, हिमांशु दुगड़, कृष्णा दुगड़ और आदेश पिरोदिया ने विशेष भूमिका निभाई। महिला मंडल अध्यक्ष कविता आछा एवं उनकी टीम की उपस्थिति भी उल्लेखनीय रही। तेरापंथ महिला मंडल हैदराबाद द्वारा समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत जल संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल्स में वॉटर कूलर भेंट किया गया।

दूसरा कार्यक्रम संवाद कौशल पर केंद्रित कार्यशाला रसीखें – द आर्ट ऑफ नेगोशिएशन्स (राह जो चाहे वो पाने की)₹ रहा, जो साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। इस कार्यशाला में 500 से अधिक लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम में भिक्षु प्रज्ञा मंडली द्वारा विजय गीत, महिला मंडल द्वारा स्वागत गीत और साध्वी मेरुप्रभा जी एवं साध्वी दक्षप्रभा जी द्वारा प्रस्तुत प्रेरक गीतिकाओं ने माहौल को ऊर्जावान बनाया। साध्वी मयंकप्रभा जी और साध्वी गवेषणाजी के सारगर्भित प्रवचनों ने सभी को प्रभावित किया। मुख्य वक्ता हार्वर्ड प्रशिक्षित, AS-IT-IS Nutrition के डायरेक्टर एवं अभातेयुप उपाध्यक्ष पवन मांडोत ने प्रभावशाली संवाद व नेगोशिएशन की कला पर विस्तार से प्रकाश डाला। राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने "ब्रांड तेरापंथ" की प्रेरणादायी व्याख्या की।

मंच संचालन संगठन मंत्री जिनेंद्र सेठिया ने किया, वहीं प्रांजल दुगड़ और गौरव भूतोड़िया ने वक्ताओं का परिचय दिया। विशिष्ट अतिथियों में महेन्द्र भंडारी, योगेश सिंघी, हिमांशु बाफना, गोपु रमन्ना रेड्डी, सभा अध्यक्ष सुशील संचेती, कोमल डागा, राहुल श्यामसुखा, विशाल आंचलिया, महिला मंडल, किशोर मंडल और कार्यकर्ताओं की सशक्त उपस्थिति रही।

तीसरा आयोजन जीएसयूपीएस मेकलामंडी डिजिटल स्कूल, कावाडीगुडा में "आचार्य महाश्रमण कंप्यूटर लैब" की स्थापना के रूप में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर तेयुप हैदराबाद द्वारा स्कूल को ऑल-इन-वन प्रिंटर व नवीनतम डेस्कटॉप सिस्टम भेंट किए गए। स्कूल की प्रधानाध्यापिका जी. स्वरूपा ने परिषद का आभार व्यक्त किया और तेयुप के विगत सहयोगों की जानकारी दी। इस आयोजन में राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा, उपाध्यक्ष पवन मांडोत, सलाहकार राजकुमार सांखला, टीटीएफ राष्ट्रीय संयोजक मनीष जैन, सह मंत्री जिनेंद्र सेठिया, कोषाध्यक्ष आशीष डाक, संगठन मंत्री जिनेंद्र बैद, जेटीन प्रतिनिधि मीनाक्षी सुराणा, किशोर मंडल संयोजक अरिहंत गुजरानी व ऋषभ चिंडालिया, पूर्व अध्यक्ष निर्मल दुगड़, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य राहुल श्यामसुखा, विशाल आंचलिया, शाखा प्रभारी कोमल डागा और अनेक कार्यकर्ता जैसे राहुल गोलछा, चेतन मर्लेचा, शुभम बंबोली, आदेश पिरोदिया, रॉबिन बैद, प्रांजल दुगड़ आदि उपस्थित रहे। कंप्यूटर सामग्री की आपूर्ति में प्रेमप्रकाश पुगलिया की विशेष भूमिका रही, जबकि संचालन सौरभ भंडारी ने किया।

साध्वी वृन्द का मंगल प्रवेश एवं प्रज्ञा दिवस का आयोजन

राजराजेश्वरी नगर।

परम पूज्य गुरुदेव की असीम अनुकंपा से साध्वी पुण्ययशा जी ठाणा-4 ने राजराजेश्वरी नगर में चातुर्मास हेतु कैलाश चंद कोठारी के निवास स्थान से विहार कर प्रेस्टीज बागमाने टेंपल बेल अपार्टमेंट में मंगल प्रवेश किया। श्रावक समुदाय ने श्रद्धा एवं उत्साहपूर्वक साध्वीवृंद का स्वागत किया।

साध्वीश्री के सान्निध्य में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के 106वें जन्मदिवस को प्रज्ञा दिवस के रूप में मनाया गया। लगभग 250 श्रद्धालुओं की उपस्थिति में 'ॐ श्री महाप्रज्ञ गुरवे नमः' मंत्र के सामूहिक सवा लाख जाप के साथ प्रज्ञा अनुष्ठान संपन्न हुआ, जिससे संपूर्ण वातावरण महाप्रज्ञमय हो उठा।

अपने प्रवचन में साध्वी पुण्ययशा जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ एक विशिष्ट प्रज्ञा-सम्पन्न संत थे। उन्होंने ध्यान-योग की उत्कृष्ट साधना द्वारा अपनी अंतर्ज्ञान शक्ति को जागृत किया। वे व्यक्ति, समाज, देश और राष्ट्र को जोड़ने वाले युगदृष्टा थे। वे राष्ट्र के भाग्य विधाता, देश की महान धरोहर, जीवन एवं जगत के अज्ञात रहस्यों के ज्ञाता, अध्यात्म के कल्पवृक्ष, प्रखर वक्ता और महान साहित्यकार थे। उन्होंने प्रेक्षा ध्यान, जीवन विज्ञान, अणुव्रत, अहिंसा प्रशिक्षण जैसे अनेक आयाम प्रस्तुत किए, जो आज के युग की महत्ती आवश्यकता हैं। ऐसे संत शताब्दियों में कभी-कभी अवतरित होते हैं। साध्वीश्री ने सभी को चातुर्मास को तप–जप–स्वाध्याय से ऐतिहासिक बनाने की प्रेरणा दी। साध्वीवृंद द्वारा आचार्य श्री के महान व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर आधारित एक रेखाचित्र के माध्यम से सुंदर और रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का विशेष आकर्षण रहा – 'गुरुवर का संदेशा लाएँ हैं, गण सैनिक बन आए हैं' शीर्षक गीतिका, जिसकी भावपूर्ण प्रस्तुति ने भाव-विभोर कर दिया।

इससे पूर्व, सभा अध्यक्ष राकेश छाजेड़ ने साध्वीवृन्द का भावपूर्ण स्वागत किया। ट्रस्ट अध्यक्ष मनोज डागा एवं तेयुप अध्यक्ष विकास छाजेड़ ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

महिला मंडल अध्यक्ष सुमन पटावरी एवं नवमनोनीत अध्यक्ष मंजू बोथरा ने स्वागत वक्तव्य दिया। प्रेस्टीज की बहनों ने महाप्रज्ञ अष्टकम एवं स्वागत गीत प्रस्तुत कर वातावरण को आध्यात्मिकता से भर दिया।

हनुमन्तनगर सभा के अध्यक्ष गौतम दक एवं श्रावक समाज की भी उपस्थिति रही। संपूर्ण कार्यक्रम की व्यवस्था हेतु प्रेस्टीज परिवार के प्रति आभार व्यक्त किया गया।

पुण्योदय से होता साधु-साध्वियों का आगमन

के. जी. एफ.।

साध्वी पावनप्रभा जी ठाणा-4 का के.जी.एफ. में भव्य चातुर्मासिक प्रवेश हुआ। कार्यक्रम मोयडू महल में आयोजित किया गया, जिसकी शुरुआत साध्वीश्री द्वारा 'ॐ ह्रीं अर्हं नमः' मंत्रोच्चार से हुई। महिला मंडल की अध्यक्ष सरिता बांठिया ने मंगल स्तुति प्रस्तुत की, वहीं बहनों ने नवकार महामंत्र पर सुंदर गीत की प्रस्तुति दी। सभा अध्यक्ष सुदर्शन बांठिया, दक्षिण कर्नाटक आंचलिक संयोजक प्रकाश लोढ़ा, ज्ञानशाला संयोजक कमलेश हिंगड़, महासभा सदस्य मूलचंद नाहर, संजय बांठिया, इंद्रचंद धोका, देवीलाल चोपड़ा, तथा हनुमंत नगर, होसकोटे व अन्य क्षेत्रों के पदाधिकारियों ने अपने विचार रखे। साध्वी आत्मयशा जी, साध्वी उन्नतयशा जी व साध्वी रम्यप्रभा जी ने चातुर्मास के अंतर्गत पावन प्रभा सुपर मार्केट की संकल्पना प्रस्तुत की, जिसमें माला सेंटर, सामायिक शोरूम, स्वाध्याय व ध्यान केंद्र जैसे कार्यक्रमों की जानकारी दी गई। ज्ञानशाला के बच्चों और महिला मंडल की बहनों द्वारा गीत व मुक्तकों की प्रस्तुतियाँ भी रहीं। संचालन प्रिया बांठिया और आभार मंत्री सुशील बांठिया ने व्यक्त किया। दूसरे चरण में एक भव्य रैली के साथ तेरापंथ सभा भवन में साध्वी वृंद का स्वागत हुआ। अपने उद्बोधन में साध्वी पावनप्रभा जी ने पांच पदों की व्याख्या कर बताया कि साधु-साध्वियों का आगमन पुण्योदय से होता है, जो आत्मा के दोषों को मिटाने हेतु प्रेरित करता है। उन्होंने श्रावकों से चातुर्मास का पूर्ण लाभ लेने का आह्वान किया। समापन सामूहिक गीत व मंगल पाठ से हुआ। कार्यक्रम में मालूर, गुडियातम , हिरियूर, हौसपेट, वैलूर, कोलार, बंगारपेट आदि क्षेत्रों के श्रद्धालु उपस्थित रहे।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
14 जुलाई - 20 जुलाई, 2025

चातुर्मासिक प्रवेश पर स्वागत कार्यक्रम का आयोजन

छतरपुर, नई दिल्ली।

तेरापंथ सभा दिल्ली के तत्वावधान में साध्वी कुन्दनरेखा जी आदि साध्वियों के चातुर्मासिक प्रवेश के अवसर पर स्वागत समारोह का भव्य आयोजन किया गया। श्रावक समाज को संबोधित करते हुए साध्वी कुन्दनरेखा जी ने कहा, 'आज का दिन हमारे लिए सौभाग्य का दिन है, क्योंकि तेरापंथ धर्मसंघ की शक्ति, भक्ति और अनुरक्ति के साथ पूज्य प्रवर की आज्ञा का अक्षरशः पालन हुआ है। तेरापंथ धर्मसंघ की प्राणवत्ता का रहस्य एक गुरु की आज्ञा में निहित है।'

साध्वीश्री ने आगे कहा, चातुर्मास का समय आध्यात्मिक उन्नयन का काल है, जिसमें स्वाध्याय, ध्यान, तपस्या और प्रवचन श्रवण के माध्यम से अंतर शोधन होता है। यह आत्म-जागरण का समय है — सभी जागें, आत्मखोज में गहराई से उतरें और भव-भ्रमण को समाप्त कर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ें। साध्वी सौभाग्ययशा जी ने कहा, 'चातुर्मास का समय प्रकाशवान बनने का अवसर है। यह देव, गुरु और धर्म के प्रति अखंड आस्था से सम्यग्दर्शन प्राप्त करने का उपयुक्त समय है। हमें विश्वास है कि आध्यात्मिक गतिविधियां निरंतर चलती रहेंगी।' साध्वी कल्याणयशा जी ने अपने वक्तव्य में कहा, 'हिंसा से बचने और जनकल्याण करने का भाव इस काल में जागृत होता है। साधु-साध्वियां एक स्थान पर निवास कर आत्म और पर कल्याण की चेतना जागृत करते हैं।'

तेरापंथ सभा दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने कहा, 'आज का चातुर्मासिक प्रवेश दिल्लीवासियों के लिए सौभाग्य का दिन है। इस पावस प्रवास के माध्यम से समाज आध्यात्म के नये-नये रहस्यों को उद्घाटित करेगा।' अणुव्रत न्यास के प्रबन्ध न्यासी के.सी. जैन ने अपने वक्तव्य में कहा, 'ध्यान जिनका प्राण है, आसन, प्राणायाम एवं कुंभक जिनकी ऊर्जा हैं और योग जिनका संयोग है — ऐसे साध्वीश्री के पावस प्रवास के लिए शुभकामनाएं।'

कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल साउथ दिल्ली की अध्यक्षा शिल्पा बैद, दिल्ली सभा, गुड़गांव महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद् दिल्ली के अध्यक्ष पवन श्यामसुखा, गांधीनगर सभा अध्यक्ष कांति बरड़िया, अणुव्रत समिति अध्यक्ष मनोज बरमेचा, रोहिणी सभा अध्यक्ष विजय जैन, नविका जैन, दक्षिण दिल्ली सभा सहित कई संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने गीतिका, वक्तव्य और मुक्तकों के माध्यम से साध्वीश्री का स्वागत किया। इस अवसर पर कैंसर स्पेशलिस्ट डॉ. राजेश कुण्डलिया ने साध्वीश्री के उत्तम स्वास्थ्य की शुभकामनाएं प्रकट कीं। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ सभा दिल्ली के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने किया। आभार ज्ञापन सुशील कुहार द्वारा किया गया।

सवा पाँच माह में चार बड़ी तपस्याएं बनीं सबके आकर्षण का केंद्र

गंगाशहर।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में मुनि नमिकुमार जी की विशिष्ट तपस्याओं का अनुमोदन समारोह श्रद्धा और उत्साह के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर मुनि कमल कुमार जी ने मुनि नमिकुमार जी द्वारा अल्पावधि में की गई चार बड़ी तपस्याओं की सराहना करते हुए कहा कि इतिहास में हमने पढ़ा और पूर्वजों से सुना है कि ऐसे तपस्वी भी होते थे जो एक ही वर्ष में कई मासखमण की तपस्याएं कर लेते थे।

आज हम यह दृश्य आचार्य श्री महाश्रमण जी के शासनकाल में प्रत्यक्ष देख रहे हैं। उन्होंने बताया कि मुनि नमिकुमार जी ने मात्र सवा पाँच महीने की अवधि में क्रमशः 39, 22, 23 और 24 उपवास की चार कठिन तपस्याएं पूर्ण कर अपनी साधना, शक्ति और भक्ति का अद्भुत परिचय दिया है। मुनिश्री ने कहा कि तपस्या का मूल उद्देश्य कर्म निर्जरा है, और निष्काम भाव से की गई तपस्या ही व्यक्ति के लिए कल्याणकारी होती है।

इस अवसर पर मुनि कमल कुमार जी ने नमि मुनि के लिए छंदों की रचना कर उनका उत्साहवर्धन किया। उन्होंने कहा कि साधु-साध्वियों को 'तपोधन' कहा जाता है, क्योंकि उनका असली धन ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप होता है। अपने सहदीक्षित मुनि श्रेयांस कुमार जी की तप साधना का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि गंगाशहर आगमन के बाद उन्होंने लगातार 13 दिन, 12 दिन तथा एकान्तर उपवास की तपस्याएं की हैं, और अब वे कंठी तप का प्रत्याख्यान कर रहे हैं।

तप के प्रभाव से उन्होंने अपना स्वास्थ्य भी सुदृढ़ कर लिया है। पहले जो कुछ ही कदम चलने में सहारा लेते थे, वे अब गोचरी के लिए भीनासर और बीकानेर तक पैदल जाते हैं। उनके मन में गुरु के प्रति श्रद्धा का गहरा भाव है और वे बिना कहे हर कार्य में सहयोग करते हैं।

मुनि श्रेयांस कुमार जी ने नमि मुनि की तपस्या की सराहना करते हुए एक मधुर गीत की प्रस्तुति दी। मुनि विमल विहारी जी ने इस तप को विलक्षण बताते हुए इसे प्रेरणा का स्रोत कहा। मुनि मुकेश कुमार जी ने भी एक भावपूर्ण भक्ति गीत प्रस्तुत किया। मुनि नमिकुमार जी ने अपने उद्बोधन में गुरुदेव की कृपा और मुनि कमल कुमार जी के मार्गदर्शन के प्रति आभार व्यक्त किया।

समारोह के दौरान कई श्रद्धालुओं ने एकासन, उपवास और बेले तप का प्रत्याख्यान किया। लाभचंद आंचलिया ने 15 दिन की तपस्या का संकल्प लिया। समारोह में बड़ी संख्या में भाई-बहनों की उपस्थिति रही।

चातुर्मासिक मंगल प्रवेश एवं शपथ ग्रहण कार्यक्रम आयोजित

जयपुर।

मुनि तत्त्वरुचि जी 'तरुण' और मुनि संभव कुमार जी ने अनुशासन रैली के साथ भिक्षु साधना केंद्र, श्याम नगर (जयपुर) में चातुर्मास हेतु प्रवेश किया। इस अवसर पर स्वागत और तेरापंथ युवक परिषद के शपथ-ग्रहण समारोह का आयोजन हुआ, जिसमें मारवाड़ जंक्शन के विधायक केसाराम चौधरी मुख्य अतिथि थे। उन्होंने श्रद्धालुओं को संत-संगति से लाभ उठाने का आग्रह किया।

अपने प्रवचन में मुनि तत्त्वरुचि जी ने समाज की स्वस्थता एवं सुख-शांति के लिए 'डिजिटल संयम' अपनाने तथा जप-तप-ध्यान के प्रयोगों पर बल दिया; मुनि संभव कुमार जी ने मुक्तकों के माध्यम से सजगता का संदेश दिया। आराधना भवन, श्याम नगर में प्रवासित साध्वी दिव्य प्रभा जी ने भी संतों का स्वागत कर मंगल-कामना व्यक्त की।

कार्यक्रम में तेरापंथी सभा, भिक्षु साधना केंद्र समिति, महिला मंडल, अणुव्रत समिति, प्रोफेशनल फोरम, किशोर व कन्या मंडल, ज्ञानशाला आदि संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने सामूहिक रूप से मुनिवृंद का स्वागत किया। मर्यादा कुमार कोठारी ने स्वागत-पत्र पढ़ा, और विधायक चौधरी को साहित्य व दुपट्टा भेंट कर सम्मानित किया गया।

नवनिर्वाचित तेयुप अध्यक्ष रवि छाजेड़ ने अपनी टीम को शपथ दिलाई, जिसकी जैन संस्कार विधि से सम्पन्नता पूर्व अणुव्रत विश्व भारती अध्यक्ष अविनाश नाहर ने करवाई। सभा अध्यक्ष शांतिलाल गोलेछा, महिला मंडल सी-स्कीम अध्यक्षा प्रज्ञा सुराणा, शहर अध्यक्षा कौशल्या जैन, भिक्षु साधना केंद्र अध्यक्ष प्रवीण कुमार बांठिया, विजय राज सोलंकी आदि ने भी विचार व्यक्त किए। महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण गीत का संगान किया।

प्रेक्षा प्रवाह कार्यशाला में गूंजा अर्हं मंत्र

कोयम्बतूर। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष के अंतर्गत तेरापंथ महिला मंडल, कोयम्बतूर द्वारा 'प्रेक्षा प्रवाह : शांति एवं शक्ति की ओर' विषयक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुआ।

मंडल अध्यक्ष मंजू सेठिया ने सभी बहनों का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया। प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षिका मंजू घोषल ने अत्यंत सरस एवं लयबद्ध रूप में अर्हं मंत्र का जप करवाया, जिससे संपूर्ण वातावरण अर्हंमय हो गया। उन्होंने अर्हं मंत्र के महत्व को सहज व सारगर्भित ढंग से समझाते हुए बताया कि इसका नियमित जप व्यक्ति को 'जीरो से हीरो' बना सकता है।

उन्होंने ज्योति केंद्र पर सफेद रंग के साथ अर्हं मंत्र के प्रयोग का अभ्यास भी करवाया। कार्यक्रम के अंत में मंत्री सुमन सुराणा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यशाला में बहनों की उत्साहपूर्ण उपस्थिति रही।

मुमुक्षु बहन का अभिनंदन समारोह आयोजित

इरोड।

असाड़ा निवासी एवं कोयंबटूर प्रवासी मंजु देवी-शांतिलाल सिंघवी की सुपुत्री मुमुक्षु बहन अंजली सिंघवी के अभिनंदन हेतु एक समारोह स्थानीय तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया।

समारोह में तेरापंथ सभा के अध्यक्ष जवेरीलाल भंसाली, महासभा कार्यकारिणी सदस्य सुरेन्द्र भंडारी, हीरालाल चौपड़ा, वीणादेवी भूतोडिया, प्रियंका सिंघवी, रेखा देवी भंसाली एवं नीतू देवी भंसाली सहित कई वक्ताओं ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी।

मुमुक्षु अंजली सिंघवी ने स्वयं अपनी संयम यात्रा और जीवन की प्रेरणादायक झलकियाँ सभी के समक्ष साझा कीं। उन्होंने बताया कि गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी के पावन सान्निध्य में कोबा में आयोजित दीक्षा समारोह में वे दीक्षा अंगीकार करेंगी।

उन्होंने समस्त धर्मसंघ को इस ऐतिहासिक दीक्षा समारोह में सादर आमंत्रित किया।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा, महिला मंडल एवं युवक परिषद द्वारा मुमुक्षु बहिन का अभिनंदन किया गया। समारोह में संघ के अनेक गणमान्य नागरिकों के साथ श्रावक-श्राविकाओं की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का कुशल संचालन एवं आभार ज्ञापन सभा के मंत्री दुलीचंद पारख द्वारा किया गया।

चाह को राह दिखाता है चातुर्मास

यशवंतपुर।

साध्वी सोमयशाजी ठाणा 3 का चातुर्मासिक प्रवेश अभिनंदन रैली के साथ यशवंतपुर सभा भवन में हुआ। साध्वी सोमयशाजी ने अपने उद्बोधन में श्रावक समाज को कहा कि संत गुरु-आशीर्वाद की आराधना करते हुए जब चातुर्मासिक क्षेत्र में पहुँचते हैं, तो गुरु निश्चिंत हो जाते हैं। आज सभी स्वागत कर रहे हैं। यह स्वागत भिक्षु की आचार परंपरा, मर्यादा और अनुशासन का है। भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष पर तीन बातों का विशेष ध्यान रखना है:

1. वचन को मधुर बनाएं।
2. मस्तिष्क को शांत बनाएं।
3. व्यवहार को उत्तम बनाएं।

साध्वी डॉ. सरलयशाजी ने कहा कि लगभग 900 कि.मी. का विहार कर साध्वियां अपने चातुर्मासिक क्षेत्र में पहुँची हैं। लक्ष्य को हासिल करने के लिए संकल्पशील होना जरूरी है। संकल्प की शक्ति से प्रमाद रूपी राक्षस दूर होता है। चातुर्मास अपनी चाह को पूरी करने की राह दिखाता है।

साध्वी ऋषिप्रभाजी ने श्रावकों के उत्साह और खुशी को देखते हुए प्रेरणा दी कि चातुर्मास में इस उत्साह को कम नहीं करना है।

उन्होंने कहा कि यशवंतपुर क्षेत्रवासी सभा, महिला मंडल, युवक परिषद के रास्ते की सेवा सराहनीय रही है। सभाध्यक्ष सुरेश बरडिया ने धर्म परिषद का स्वागत करते हुए साध्वी वृंद के प्रति मंगलकामना की। सभा, महिला मंडल और युवक परिषद की संयुक्त रूप से गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता के भावों के साथ स्वागत गीतिका प्रस्तुत की गई।

तेरापंथ भवन निर्माण संयोजक हीरालाल मालू ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यशवंतपुर एक श्रद्धावान एवं साताकारी क्षेत्र है। ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों द्वारा 'धर्म का सिपाही हूँ' गीत की सुंदर प्रस्तुति हुई। महिला मंडल व कन्या मंडल द्वारा शब्द चित्र प्रस्तुत किया गया, जिसमें रेखा पितलिया ने स्वागत करते हुए के.जी.एफ. क्षेत्र से साध्वी पावनप्रभाजी के मंगलकामना संदेश का वाचन किया। लाडली मुथा ने तीनों साध्वियों का संक्षिप्त परिचय दिया। लता भंसाली एवं मीना दक ने साध्वीश्री के विहार क्षेत्रों का उल्लेख किया एवं सभी से चातुर्मास का समय अधिक तप, जप, ध्यान में बिताने का आह्वान किया।

प्रवक्ता उपासक महेन्द्र दक ने स्वरचित स्वागत गीत का संगान किया। नवीन बरडिया और गगन बरडिया ने भी गीत का संगान किया।

साध्वी संयमलताजी के मंगलकामना संदेश का वाचन विजयनगर अध्यक्ष मंगल कोचर ने किया।

राज राजेश्वरी नगर से अध्यक्ष राकेश छाजेड, राजाजीनगर अध्यक्ष अशोक चौधरी, टी.पी.एफ. वेस्ट जोन अध्यक्ष ललित बेंगानी, दासरहल्ली महिला मंडल अध्यक्ष नेहा चावत, पूर्व मंत्री महावीर ओस्तवाल और महावीर गन्ना ने विचार व्यक्त किए। शिवमोगा से हेमलता बाफना, सौंदत्ति से आयुषी लुंकड़ ने मंगलकामना के भाव व्यक्त किए।

निवर्तमान अध्यक्ष गौतम मुथा, पूर्व अध्यक्ष प्रकाश बाबेल, मेवाड़ भवन, स्थानकवासी संघ, मंदिर मार्गी संघ से गणमान्य व्यक्ति एवं चातुर्मास के मुख्य प्रायोजक बोराणा परिवार ने भी अभिनंदन के भाव रखे।

प्रवेश कार्यक्रम का संचालन एवं संयोजन करते हुए मंत्री अनिल दक ने सभी आगंतुकों का स्वागत किया एवं साध्वी पुण्ययशा के द्वारा प्राप्त मंगलकामना के भाव व्यक्त करते हुए त्रिदिवसीय जप अनुष्ठान एवं रात्रिकालीन कार्यक्रम की जानकारी दी।

आभार उपाध्यक्ष कुंदन गन्ना ने किया। रैली संयोजक सुनील बाबेल ने रैली की व्यवस्था संभाली। यशवंतपुर एवं आस-पास के क्षेत्रों से श्रावक समाज की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

❖ इन्द्रियाँ अपने आप में अशुभ नहीं होतीं। किंतु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं।

……………………………………………………

❖ आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए।

— आचार्य श्री महाश्रमण

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

जैन संस्कार विधि

नामकरण संस्कार

■ **साउथ हावड़ा।** गंगाशहर निवासी साउथ हावड़ा प्रवासी राजेंद्र - अंजू सेठिया की सुपौत्री एवं वरुण - कृति सेठिया की सुपुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा के सहयोग से सम्पादित हुआ। संस्कारक पवन बैंगानी एवं मनीष कुमार बैद ने मंत्रोच्चार द्वारा कार्यक्रम संपादित करवाया।

चातुर्मासिक प्रवेश पर मिली आत्म कल्याण की प्रेरणा

पीतमपुरा।

आचार्यश्री महाश्रमण जी की विदुषी सुशिष्या 'शासनश्री' साध्वी सुव्रता जी ठाणा-4 का भव्य चातुर्मासिक प्रवेश पीतमपुरा स्थित सेठ अग्रसेन खिलौनी देवी धर्मशाला में हुआ।

मुख्य अतिथि अमित नागपाल (निगम पार्षद, पीतमपुरा) एवं विशिष्ट अतिथि विनीता भारद्वाज (उपाध्यक्ष, भाजपा महिला मोर्चा, पीतमपुरा) ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि, 'साधु-संतों का आगमन क्षेत्र के लिए अत्यंत मंगलकारी होता है। इनके प्रवचनों से ज्ञान का प्रकाश फैलता है, जो अंततः मोक्ष मार्ग की ओर ले जाता है। साध्वी सुव्रता जी ने आचार्यश्री महाश्रमण जी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा, 'साध्वी रतनश्री जी के देवलोकगमन के पश्चात यह हमारा प्रथम चातुर्मास है। गुरुदेव की अनंत कृपा से इस वर्ष का चातुर्मास पीतमपुरा में हो रहा है। यह क्षेत्र हमारे लिए अत्यंत परिचित है। साध्वी रतनश्री जी ने यहाँ जो आध्यात्मिक बीजारोपण किया था, हम उसका लाभ उठाएँगे।'

साध्वी सुमनप्रभा जी ने उपस्थित समाज को चातुर्मास में जप, तप और स्वाध्याय के माध्यम से अधिकाधिक आत्मकल्याण करने की प्रेरणा दी। वहीं, साध्वी कार्तिकप्रभा जी एवं साध्वी चिंतनप्रभा जी की पावस प्रस्तुति ने उपस्थित जनसमूह को भाव-विभोर कर दिया। कार्यक्रम का शुभारंभ पीतमपुरा की बहनों द्वारा मंगलाचरण से हुआ। दिल्ली की विभिन्न सभाओं के अध्यक्षों, खिलौनी देवी परिवार, शालीमार बाग एवं मानसरोवर गार्डन की बहनों ने गीतिकाओं के माध्यम से साध्वीश्री का आत्मीय स्वागत किया। विशेष अतिथियों व गणमान्य उपस्थितजनों में महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड़, आंचलिक प्रभारी के.के. जैन, मन्नालाल बैद, तेयुप दिल्ली के कोषाध्यक्ष सिद्धार्थ जैन, तेरापंथ भवन महरौली से सुशील कोहाड़, अमृतवाणी के सहमंत्री संदीप डूंगरवाल, दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत, पीतमपुरा सभा अध्यक्ष लक्ष्मीपत भूतोड़िया, शालीमार बाग सभा की अध्यक्ष सज्जन गिरिया, मानसरोवर गार्डन सभा अध्यक्ष नरेंद्र पारिख, कीर्ति नगर सभा अध्यक्ष मनोज सुराणा, त्री नगर सभा अध्यक्ष संजीव जैन, शास्त्री नगर सभा अध्यक्ष राजा कोठारी, उत्तर दिल्ली महिला मंडल से भारती रांका, पश्चिम दिल्ली महिला मंडल से रीता चोरड़िया, ज्ञानशाला परामर्शक मनफूल बोथरा आदि ने भी साध्वीश्री का भावभीना स्वागत किया।

कार्यक्रम का संचालन पीतमपुरा सभा के मंत्री विरेन्द्र जैन ने किया। आभार ज्ञापन दिल्ली सभा के उपाध्यक्ष एवं पीतमपुरा निवासी बिमल बैंगानी ने प्रस्तुत किया।

बच्चों के स्वास्थ्य विषयक राज्य स्तरीय संगोष्ठी संपन्न

चेन्नई।

यूनिसेफ और अन्ना विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में एएसीईजी सेमिनार हॉल, अन्ना विश्वविद्यालय परिसर में बच्चों में बढ़ती बीमारियों और स्वास्थ्य संबंधी सुधार के उद्देश्य से राज्य स्तरीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत में यूनिसेफ तमिलनाडु-केरल प्रबंध निदेशक के. एल. राय ने स्वागत भाषण दिया। यूनिसेफ संचार विशेषज्ञ सेयम सुधीर बंदी ने विषयवस्तु का संयोजन करते हुए संगोष्ठी की रूपरेखा प्रस्तुत की।

अन्ना विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ. एस. अरुलसेल्वन ने पीपीटी के माध्यम से बच्चों में मोटापा, मधुमेह, अस्थमा एवं मानसिक रोग जैसे बढ़ते गैर-संचारी रोगों (NCDs) पर विस्तृत डेटा सहित प्रस्तुति दी। उन्होंने इन बीमारियों के कारणों और असमय मृत्यु की संभावनाओं पर भी प्रकाश डाला।

स्वास्थ्य चिंताओं की व्यापकता को देखते हुए संगोष्ठी में सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों के लगभग 40 प्रतिनिधियों ने अपने विचार साझा किए। इस अवसर पर जैन श्वेतांबर तेरापंथ समाज की ओर से अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल कार्यकारिणी सदस्य माला कातरेला ने प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने भगवान महावीर के स्वास्थ्य सिद्धांतों एवं आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रस्तुत जीवन विज्ञान की अवधारणा पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि यह शिक्षा केजी से लेकर प्रोफेशनल कोर्सेज तक के छात्रों के लिए उपयोगी है।

अणुव्रत समिति, चेन्नई के मंत्री स्वरूपचंद दाँती ने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए सात महत्वपूर्ण बिंदुओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, संयुक्त राष्ट्र से मान्यता प्राप्त NGO है, जो नशामुक्ति, पर्यावरण संरक्षण, डिजिटल डिटॉक्स जैसे विषयों पर 76 वर्षों से कार्यरत है।

इस अवसर पर यूनिसेफ एवं अन्य गणमान्य अतिथियों को जीवन विज्ञान तथा जैन साहित्य भेंट किए गए। कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल, किलपाक से अध्यक्ष अनीता सुराणा, उपाध्यक्ष मेघा मांडोत तथा मंत्री वनिता नाहर सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

युगप्रधान आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का 106वें जन्मोत्सव पर देशभर में आयोजित विभिन्न कार्यक्रम

आचार्य महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व के थे अनेक रूप

दिल्ली। आचार्य महाप्रज्ञ एक व्यक्ति अवश्य थे, लेकिन उनके व्यक्तित्व के अनेक रूप थे। कभी वे आचार्य भिक्षु के विचारों को युगानुकूल रूप में प्रस्तुत करते दिखते, तो कभी आचार्य तुलसी के भाष्यकार के रूप में दृष्टिगोचर होते। कभी वे दार्शनिक और साहित्यकार बन जाते, तो कभी आगम संपादक के रूप में सक्रिय दिखाई देते। कभी प्रशासनिक कार्यों में व्यस्त रहते, तो कभी आंखें मूंदकर अंतरजगत में गोते लगाते। उनके इन सभी रूपों को समझना और उनका विश्लेषण करना अत्यंत कठिन कार्य है। उन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ को आकाश जैसी ऊंचाई और समुद्र जैसी गहराई प्रदान की, और जैन धर्म की पहचान को एक नई दिशा दी। उपरोक्त विचार 'शासनश्री' साध्वी सुव्रतांजी ने आचार्य महाप्रज्ञ जन्मोत्सव कार्यक्रम में समाज को संबोधित करते हुए कहे। कार्यक्रम का शुभारंभ शालीमार बाग की बहनों द्वारा हुआ।

'शासनश्री' साध्वी सुमनप्रभा जी ने आचार्य महाप्रज्ञ जी की विलक्षण विशेषताओं को रेखांकित करते हुए कहा कि उनके व्यक्तित्व को किसी मापदंड से नहीं परखा जा सकता। वे आज हमारे बीच नहीं हैं, किंतु उनके द्वारा दिया गया योगदान इतिहास के उज्ज्वल पृष्ठों पर और हमारे जीवन व्यवहार में सदैव अंकित रहेगा। साध्वी कार्तिकप्रभा जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ संयम के महासूर्य और ज्ञान के महासागर थे। उनके पवित्र आभामंडल में बुद्ध की करुणा, महावीर की समता और महात्मा गांधी की अहिंसा की अभिव्यक्ति होती थी। अध्यक्षा सज्जनदेवी गिडिया ने सभी आगंतुकों का स्वागत करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ जी के चरणों में श्रद्धा समर्पित की। संजय खटेड़ ने सभा में उपस्थित गणमान्य अतिथियों का परिचय देते हुए अपने भावों को साझा किया। इनमें महासभा के उपाध्यक्ष अणुव्रत न्यास के ट्रस्टी डालम चंद बैद, तेरापंथ सभा दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, मानसरोवर से नरेंद्र पारख, पश्चिम विहार से श्यामलाल जैन, रोहिणी सभा अध्यक्ष विजय जैन, पीतमपुरा सभा अध्यक्ष लक्ष्मीपत भूतोड़िया, मंत्री वीरेन्द्र जैन, ज्ञानशाला परामर्शक मनफूल जैन, ईश्वर जैन, पालम सभा अध्यक्ष राजा कोठारी, शास्त्री नगर सभा अध्यक्ष तथा उत्तर-मध्यम दिल्ली महिला मंडल अध्यक्ष मधु जैन, कमला बैंगाणी आदि प्रमुख थे। शालीमार बाग की बहनों ने शब्दचित्र के माध्यम से आचार्य महाप्रज्ञ की भावभरी अभिवंदना प्रस्तुत की। अजय जैन ने आगंतुकों के प्रति आभार व्यक्त किया। इस आयोजन में शास्त्री नगर, पीतमपुरा, रोहिणी, पश्चिम विहार, मानसरोवर, पालम, त्रिनगर, लाजपत नगर आदि क्षेत्रों के श्रद्धालुओं की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन साध्वी चिंतनप्रभाजी ने किया।

प्रज्ञा के प्रखर महासूर्य थे आचार्य महाप्रज्ञ

बालोतरा। साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा के तत्वावधान में डीडवाणिया भवन में प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का 106वां जन्म दिवस प्रज्ञा दिवस के रूप में मनाया गया। साध्वीश्री ने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी प्रज्ञा के प्रखर महासूर्य थे। उनकी नवोन्मेषी प्रज्ञा ने संघ के भाल पर विकास के नवीन आलेख लिखे, जो आज भी संघ के सौभाग्य को अभिवर्धित कर रहे हैं। वे समर्पण के शलाका पुरुष थे। उनके इसी समर्पण ने उन्हें अज्ञ से प्रज्ञ, प्रज्ञ से महाप्रज्ञ, और महाप्रज्ञ से संघ सरताज पद तक प्रतिष्ठित किया। वे समत्वयोग के उत्तुंग शिखर पर आरूढ़ महासंत थे। उनका ज्ञान महासागर के समान विशाल था। उनकी महर्घ्य ज्ञानमणियों ने संघ को गौरवान्वित किया। उनके अभीक्षण ज्ञानोपयोग ने संघ को समृद्ध बना दिया।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी को कंघा और दर्पण बहुत प्रिय थे। उन्होंने कंधे की तरह जनमानस की समस्याओं को सुलझाया और आत्मा से साक्षात्कार के लिए प्रेक्षाध्यान रूपी दर्पण प्रदान किया। डॉ. साध्वी सुधा प्रभा जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी दिव्य ऊर्जा के अक्षय स्रोत थे। उनकी अंतःप्रज्ञा ने अनेकों की समस्याओं का समाधान किया। वे केवल संत नहीं, महासंत, राष्ट्रसंत ही नहीं बल्कि विश्वसंत बनकर समूचे विश्व को अपनी प्रज्ञा से आलोकित कर गए। साध्वी समत्वयशा जी ने 'वो कौन सा फूल खिलखिला' गीत का सुमधुर संगान कर वातावरण को महाप्रज्ञमय बना दिया। साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने मंच संचालन करते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी कर्मयोगी, धर्मयोगी, अध्यात्मयोगी और आत्मयोगी थे। सभा के उपाध्यक्ष ललित जीरावला, मंत्री प्रकाश बैद मुथा, तेयुप अध्यक्ष संदीप रेहड़, तनिषा चौपड़ा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल की ओर से गीत के माध्यम से भावांजलि अर्पित की गई। प्रकाश श्रीमाल ने संगान प्रस्तुत किया।

अहंकार से पूर्णतः मुक्त थे आचार्य महाप्रज्ञ

डीडवाना। तेरापंथ धर्मसंघ के दशमाधिशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की जयंती, प्रज्ञा दिवस के रूप में साध्वी गुप्तिप्रभा जी के सान्निध्य में मनाई गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए साध्वी गुप्तिप्रभा जी ने आचार्य महाप्रज्ञ जी की विलक्षणताओं का उल्लेख करते हुए कहा, 'समुद्र की लहरों को गिनना मुमकिन नहीं, धरती के कणों को गिनना संभव नहीं, समुद्र को तुला से तोला नहीं जा सकता, आकाश को भुजाओं से मापा नहीं जा सकता — उसी प्रकार आचार्य महाप्रज्ञ जी की विशेषताओं को शब्दों में बांधा नहीं जा सकता। एक छोटी-सी पिताजी की दुकान से प्रारंभ कर अध्यात्म की एक विशाल दुकान खोली और समस्त जगत को अपना बना लिया।'

उन्होंने आगे कहा कि आचार्य पद तक पहुंचने में अनेक विलक्षण गुणों ने भूमिका निभाई। 'बचपन में समर्पण होना सामान्य है, लेकिन बड़े होकर भी समर्पण भाव बना रहना असाधारण है। जैसे मेघ के साथ आंधी आती है वैसे ही ज्ञान के साथ अहंकार आ सकता है, लेकिन आचार्य महाप्रज्ञ जी इससे पूर्णतः मुक्त रहे। वे अत्यधिक योग्यता, अक्षुण्ण चरित्र और संघीय चिंतन से समृद्ध थे। यही कारण रहा कि आचार्य श्री तुलसी ने उन्हें आचार्य पद से अलंकृत किया।'

साध्वी मौलिकयशा जी ने कार्यक्रम का मंगलाचरण किया एवं 'महाप्रज्ञ' नाम का भावपूर्ण विश्लेषण करते हुए सुंदर अभिव्यक्ति दी। इस अवसर पर नगेंद्र मणोत, नरेंद्र मणोत, सभा अध्यक्ष सुरेश चोपड़ा, प्रदीप मणोत, श्रेयस संचेती, प्रिंस मणोत, विनीता एवं दिव्या चोपड़ा ने विविध रूपों में अपनी भावांजलि अर्पित की। कुशल संचालन साध्वी भावितयशा जी द्वारा किया गया।

समर्पण, विनय और शिक्षा गुरु के प्रति था अनन्य भाव

नाथद्वारा। साध्वी रचनाश्री जी के सान्निध्य में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का 106वां जन्मदिवस मनाया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी एक ऐसे व्यक्तित्व थे, जिनमें समर्पण, विनय तथा गुरु और शिक्षा गुरु के प्रति अनन्य भाव था। बाल मुनि की अवस्था में ही उन्होंने दृढ़ संकल्प कर लिया था कि मैं ऐसा कोई कार्य नहीं करूंगा जो मेरे शिष्य गुरु को पसंद न हो। जन्म से ही माता ने उनमें आध्यात्मिक संस्कार भर दिए थे। टमकोर में मुनि छबीलजी स्वामी के चातुर्मास में उन्हें प्रेरणा मिली और वे संघ में दीक्षित हो गए।

प्रारंभ में वे अज्ञ थे, अज्ञ से विज्ञ बने, फिर विशेषज्ञ बने और अंततः महाप्रज्ञ बन गए। वे इतने सरल थे कि मुनि मगनलाल स्वामी ने कहा कि पांचवें आरे में कोई सर्वज्ञ नहीं बन सकता, यदि बन सकता तो सबसे पहले आचार्य महाप्रज्ञ ही बनते। उनका प्रवचन इतना सरस और सरल भाषा में होता था कि प्रत्येक व्यक्ति यह अनुभव करता कि यह तो मेरे लिए ही फरमा रहे हैं। साध्वी प्राज्ञप्रभा जी ने शासन माता द्वारा रचित कविता का पाठ किया।

साध्वीवृंद ने सामूहिक रूप से एक सुमधुर गीत का संगान किया। महासभा के सदस्य कांतिलाल धाकड़, महिला मंडल की अध्यक्षा मंजू पोरवाल एवं फतेहचंद बोहरा ने अपने विचार व्यक्त किए। मंगलाचरण महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी गीतार्थप्रभा जी ने किया।

बाह्य और आंतरिक व्यक्तित्व समान रूप से था उज्ज्वल

चेंबूर, मुंबई। तेरापंथ धर्म संघ के दशम अधिशास्ता युगप्रधान आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का 106वां जन्म दिवस 'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में चेम्बूर सभा भवन में श्रद्धापूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीवृंद द्वारा नमस्कार महामंत्र एवं आचार्य अभिवंदना के साथ हुई। 'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभा जी ने अपने संबोधन में कहा कि आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी विशद आध्यात्मिक शक्ति से संपन्न एक तपस्वी महापुरुष थे। उनकी विनय, श्रद्धा और समर्पण भावना विलक्षण थी। उनका बाह्य और आंतरिक व्यक्तित्व समान रूप से उज्ज्वल था। उन्होंने आचार्य तुलसी के नेतृत्व में जैन आगमों का कुशल संपादन किया और समाज में शांति, संयम और सह-अस्तित्व का संदेश दिया। शासनश्री' साध्वी मंजुरेखा जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी की अहिंसा यात्रा ने सम्प्रदायों के बीच सौहार्द का वातावरण निर्मित किया। इसी की परिणति थी कि पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने उनके चरणों में उपस्थित होकर अपना जन्मदिवस भी उनके सान्निध्य में मनाया।

साध्वी उदितप्रभा जी, साध्वी निर्भयप्रभा जी एवं साध्वी चेलना जी ने भक्ति भावों से पूज्य गुरुदेव के जीवन प्रसंगों को सरस व प्रेरणास्पद ढंग से प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम के विशेष अतिथि स्थानीय विधायक तुकाराम काते ने आचार्य महाप्रज्ञ जी के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए आयोजन में सहभागी होने को अपना सौभाग्य बताया।

एक सौ छह भाई-बहनों द्वारा सामूहिक रूप से गीत का संगान कर चेम्बूर सभा भवन को भक्ति भाव से गुंजायमान कर दिया गया। इस अवसर पर मुंबई व्यापारी सेल अध्यक्ष लक्ष्मण कोठारी, सभा अध्यक्ष रमेश धोका, मंत्री दिलीप मेहता, महिला मंडल अध्यक्षा मनीषा कोठारी, मंत्री बेला डांगी सहित घाटकोपर, विक्रोली, सायन, कोलीवाड़ा, कुर्ला आदि क्षेत्रों के श्रावक-श्राविकाओं की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

एक शाम – महाप्रज्ञ के नाम

बरकत नगर, जयपुर। बरकत नगर स्थित लोढ़ा निवास में मुनि तत्त्वरुचि जी 'तरुण' एवं मुनि संभवकुमार जी के सान्निध्य में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के 106वें जन्मदिवस के उपलक्ष में 'एक शाम - महाप्रज्ञ के नाम' भव्य भक्ति संध्या का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में मुनि तत्त्वरुचि जी तरुण ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की वंदना-अर्चना में एक सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर तेरापंथ महिला मंडल द्वारा सामूहिक गीत प्रस्तुत किए गए। इसके पश्चात श्रावक समाज की ओर से भी एकल और सामूहिक भक्ति गीतों की प्रस्तुति दी गई।

युगप्रधान आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का 106वें जन्मोत्सव पर देशभर में आयोजित विभिन्न कार्यक्रम

जन्म दिवस पर संस्कार निर्माण शिविर सम्पन्न

जंगमपुरा। आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि अर्हत कुमार जी ठाणा-3 का तेरापंथ भवन, जंगमपुरा में आगमन हुआ। यह आगमन लगभग 40 वर्षों के लंबे अंतराल के बाद हुआ, जिसने समस्त श्रावक समाज में उत्साह और श्रद्धा का संचार कर दिया। मुनिश्री के सान्निध्य में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मुनिश्री के नवकार मंत्र के संगान से हुई। मंगलाचरण के रूप में ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं द्वारा 'महाप्रज्ञ अष्टकम' का संगान किया गया।

कार्यक्रम में तेरापंथ सभा अध्यक्ष निर्मल नाहटा, मध्यप्रदेश आंचलिक प्रभारी निलेश रांका, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष अर्पित जैन एवं तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम अध्यक्ष चंद्रकुमार भटेरा ने अपने वक्तव्यों में आचार्य महाप्रज्ञ जी के आदर्शों और सिद्धांतों का गुणगान करते हुए उनके जीवन-दर्शन को वर्तमान पीढ़ी के लिए प्रेरणादायी बताया। धर्मेश-नम्रता जैन की सुपुत्री एवं गायिका अवनि जैन ने एक भावपूर्ण गीत प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम की अगली कड़ी में मुनि भरत कुमार जी ने संस्कार शिविर के सभी बच्चों को प्रेक्षा ध्यान और जीवन विज्ञान की उपयोगिता समझाई और प्रायोगिक रूप से ध्यान का प्रशिक्षण भी प्रदान किया। मुनि जयदीप कुमार जी ने आचार्य महाप्रज्ञ जी पर आधारित गीतिका का संगान किया। 'संस्कारमय हो हमारी जीवनशैली' विषय पर आधारित इस शिविर में लगभग 70 बच्चों का पंजीकरण हुआ। शिविर में योग, प्रेक्षा ध्यान एवं मुनिश्री द्वारा दिए गए विभिन्न प्रवचन सत्रों का बच्चों ने भरपूर लाभ उठाया। इस अवसर पर ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा मुनिश्री के समक्ष मनोहारी प्रस्तुतियाँ दी गईं। जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी सिद्धार्थ जैन ने भी कार्यक्रम में अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराई।

अपने वक्तव्य में मुनि अर्हत कुमार जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी को चार वस्तुएं अत्यंत प्रिय थीं – टॉर्च, कंघा, घड़ी और दर्पण। उन्होंने इन वस्तुओं की गूढ़ व्याख्या करते हुए कहा कि टॉर्च आत्मप्रकाश का प्रतीक है, कंघा समस्याओं को सुलझाने का संकेत देता है, घड़ी समय प्रबंधन की प्रेरणा देती है और दर्पण आत्मनिरीक्षण अर्थात प्रेक्षाध्यान का प्रतीक है। मुनिश्री ने इन्हीं उदाहरणों के माध्यम से आचार्य महाप्रज्ञ जी के जीवन की गहराइयों से परिचय कराया।

कार्यक्रम के दौरान जंगमपुरा ट्रस्ट मंडल की ओर से स्वर्गीय दिलीप छाजेड़ की स्मृति में दो विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान की गई। यह छात्रवृत्ति ट्रस्टी रमेश कोठारी, निर्मल नाहटा एवं ज्योति छाजेड़ द्वारा प्रदान की गई। कार्यक्रम का सफल संचालन तेरापंथ सभा के मंत्री राकेश भंडारी द्वारा किया गया। अंत में आभार ज्ञापन तेरापंथ सभा की ज्ञानशाला प्रभारी अंजु कठोतिया द्वारा किया गया।

आचार्य महाप्रज्ञ का 106वा जन्मदिवस

बोरावड़। 'शासनश्री' साध्वी मधुरेखा जी के सान्निध्य में आचार्य महाप्रज्ञ जी का 106वाँ जन्मदिवस समारोहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें कन्या मंडल, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद और ज्ञानशाला के बच्चों ने अपनी प्रस्तुतियाँ दीं।

कार्यक्रम का शुभारंभ कन्या मंडल की कनिष्का कोटेचा के मंगलाचरण से हुआ। तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा हर्षा चोरड़िया एवं भारती कोटेचा ने सामूहिक गीतिका प्रस्तुत की।

सभा अध्यक्ष नेमीचंद गेलड़ा और तेरापंथ युवक परिषद के मंत्री अमित लोढ़ा सहित ज्ञानशाला के बच्चों ने मनमोहक प्रस्तुतियाँ दीं। प्रकाश लोढ़ा और भावना कोटेचा ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति के साथ गीतिका प्रस्तुत की।

साध्वी लोकोत्तरप्रभा जी ने आचार्य महाप्रज्ञ के संस्मरण सुनाते हुए एक कविता प्रस्तुत की। साध्वी सुव्रतयशा जी ने आचार्य महाप्रज्ञ के योगदान पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उन्होंने आचार्य भिक्षु के सिद्धांतों एवं विचारों को देश-विदेश तक पहुँचाया और आचार्य तुलसी के आयामों को जन-जन तक पहुँचाया। उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ के चिंतन की गहराई और वाणी की मिठास का भी उल्लेख किया।

शासनश्री' साध्वी मधुरेखा जी ने अपने उद्बोधन में आचार्य महाप्रज्ञ को प्रज्ञा का शिखर पुरुष बताया। उन्होंने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ ने प्रज्ञा का अमृत बांटा, जिसका अमृतपान कर आज हम शांति का अनुभव करते हैं। उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ के छोटे से गाँव में जन्म लेने और विषम परिस्थितियों के बावजूद प्रज्ञावान बनने की प्रेरणादायक कहानी भी साझा की। इस अवसर पर 80 भाई-बहनों ने विविध प्रकार के प्रत्याख्यान किये। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी मधुयशा जी ने किया।

महाप्रज्ञ को जानने के लिए स्वयं को भी महाप्रज्ञ बनना होगा

चेन्नई। प्रेक्षा प्रणेता आचार्य महाप्रज्ञ जी का 106वां जन्मदिवस 'प्रज्ञा दिवस' के रूप में, साध्वी उदितयशा जी के सान्निध्य में, नॉर्थ टाउन तेरापंथ समाज के प्रायोजकत्व में श्री सुमतिवल्लभ श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ भवन में श्रद्धा और गरिमा के साथ मनाया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण के साथ हुई, जिसके पश्चात साध्वी भव्ययशा जी एवं साध्वी शिक्षाप्रभा जी ने महाप्रज्ञ अष्टकम से मंगलाचरण किया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए साध्वी उदितयशा जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी की साधना द्वैत से अद्वैत, भेद से अभेद की ओर ले जाने वाली थी। उनका चिंतन संतुलन का प्रतीक था – अचिंतन की परिस्थिति में भी स्थिर और समभाव युक्त। उन्होंने कहा कि महाप्रज्ञ को जानने और समझने के लिए स्वयं को भी महाप्रज्ञ बनाना होगा। वे राग-द्वेष से ऊपर उठकर वीतराग साधना में लीन थे और बाह्य जगत में रहते हुए भी अंतरंग साधना में रत थे। अपने सूक्ष्म शरीर की आराधना से उन्होंने संघ को अनेक नवीनतम आध्यात्मिक और सामाजिक आयाम प्रदान किए।

साध्वीश्री ने आगे कहा कि शब्दों के अतिक्रमण से बचते हुए हमें आत्मदर्शन और ध्यान-साधना की ओर यात्रा करनी चाहिए। साध्वी संगीतप्रभा जी ने कुशल संचालन करते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ एक महान दार्शनिक, वैज्ञानिक दृष्टि वाले संत और सफल संघ संचालक थे। वे मन के ज्ञाता थे, जो सामने वाले के मनोभावों को पढ़ने और वस्तुस्थिति को समझने में अद्भुत सामर्थ्य रखते थे। साध्वी शिक्षाप्रभा जी ने काव्यात्मक शैली में कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ प्रज्ञा का आलोक लिए हुए, धरती पर महासूर्य की भांति दैदिप्यमान बने। उनके गुणों को आत्मसात कर जीवन को समृद्ध बनाना चाहिए।

कार्यक्रम में तेरापंथ सभा चेन्नई के अध्यक्ष अशोक खतंग, महिला मंडल चेन्नई की अध्यक्षा लता पारख और तेरापंथ युवक परिषद के निवर्तमान अध्यक्ष संदीप मुथा ने आचार्य महाप्रज्ञ जी के जीवन और दर्शन पर अपने विचार रखे। महिला मंडल द्वारा सामूहिक गीतिका की सुंदर प्रस्तुति दी गई। इस अवसर पर तेरापंथ सभा चेन्नई के तत्वावधान में आगामी 'मेगा हेल्थ चेकअप कैम्प' के बैनर का अनावरण भी किया गया। कार्यक्रम की समायोजना में नॉर्थ टाउन परिवार के सदस्यों का उल्लेखनीय योगदान रहा।

आचार्य महाप्रज्ञ के हर ग्रंथ में है जीवन को बदल देने की शक्ति

वाणियंबाड़ी (तमिलनाडु)। वाणियंबाड़ी में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की 106वीं जन्म जयंती समारोह श्रद्धा एवं उल्लास के साथ मुनि रश्मिकुमार जी के सान्निध्य में संपन्न हुआ। इस अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में 'द इंडियन एक्सप्रेस' समाचार पत्र के संस्थापक रामनाथ गोयनका के पौत्र प्रशांत गोयनका की विशेष उपस्थिति रही। समारोह का शुभारंभ दिलीप बाफना द्वारा स्वागत भाषण के साथ हुआ। मुनि रश्मिकुमार जी ने आचार्य महाप्रज्ञ जी के प्रेरणादायक जीवन चरित्र, दीक्षा प्रक्रिया, त्यागमय जीवनशैली एवं आध्यात्मिक साधना की महत्वपूर्ण घटनाओं को सरल एवं प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ जी ने 300 से अधिक ग्रंथों की रचना की, जिनमें जीवन को दिशा देने और परिवर्तन की शक्ति समाहित है।

कार्यक्रम के दौरान वाणियंबाड़ी महिला मंडल द्वारा एक भावपूर्ण प्रस्तुति दी गई, जबकि ज्ञानशाला के बच्चों ने बाल महाप्रज्ञ के वैराग्य जागरण और आचार्य कालूगणी जी से दीक्षा प्राप्त करने की घटनाओं को नाट्य रूपांतरण के माध्यम से अत्यंत सुंदर रूप में प्रस्तुत किया। इस विशेष आयोजन में वाणियंबाड़ी सहित गुड़ियात्तम, मायावरम, कृष्णागिरी, मादनूर, तिरुपत्तूर आदि क्षेत्रों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में वाणियंबाड़ी तेरापंथ सभा अध्यक्ष चंद्रप्रकाश दूगड़, महेंद्र दूगड़, दिलीप बाफना, धीरज बाफना, नरेंद्र दूगड़ सहित अनेक कार्यकर्ताओं का सक्रिय सहयोग रहा।

स्थिरयोगी के रूप में प्रतिष्ठित थे आचार्य श्री महाप्रज्ञ

सरदारपुरा। 'शासनश्री' साध्वी सत्यवती जी के सान्निध्य में प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का 106वां जन्मदिवस भावपूर्वक मनाया गया। इस अध्यात्मिक आयोजन में साध्वी रोशनीप्रभा जी ने गुरु-शिष्य के अनहद वात्सल्य और जीवन प्रसंगों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। साध्वी शशिप्रज्ञा जी ने कहा कि कई शताब्दियों में एक बार ऐसे महापुरुष जन्म लेते हैं, जिनकी सरलता ही उन्हें महान बनाती है। किसी ने उन्हें आचार्य सिद्धसेन कहा, तो किसी ने विवेकानंद; परंतु उनके ज्ञानगुरु ने उन्हें 'महाप्रज्ञ' ही रहने दिया।

साध्वी पुण्यदर्शना जी ने अदृश्य जगत के इस महायोगी से जुड़े प्रश्नों और उत्तरों के माध्यम से उपस्थित जनों की ज्ञानवृद्धि का प्रयास किया। 'शासनश्री' साध्वी सत्यवती जी ने अपने अभिवंदन स्वर में कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी न केवल संत थे, बल्कि एक कुशल दार्शनिक, चिंतक और विद्वान पंडित भी थे। वे स्थिर योगी के रूप में प्रतिष्ठित थे, जिनकी साधना से सूर्य भी पथ प्रदर्शक बनता और चंद्रमा स्वयं शीतलता की छाया देता।

अर्चना के स्वर में तेरापंथ महिला मंडल ने 'महायुद्ध जीवन' की एक झलक नाट्य रूप में प्रस्तुत की और गीतिका के माध्यम से अपनी आस्था को प्रकट किया।

इस अवसर पर सभा अध्यक्ष सुरेश जीरावला, नवनिर्वाचित तेयुप अध्यक्ष मनसुख संचेती, प्रो. महावीर राज गेलड़ा और जगदीश धारीवाल ने भी अपने भाव व्यक्त किए। कार्यक्रम का शुभारंभ संगीता जीरावला और चन्द्रा जीरावला के मंगलाचरण से हुआ। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा मंत्री महावीर चोपड़ा द्वारा किया गया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
14 जुलाई - 20 जुलाई, 2025

युगप्रधान आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का 106वें जन्मोत्सव पर देशभर में आयोजित विभिन्न कार्यक्रम

प्रेक्षाध्यान मासिक कार्यशाला का आयोजन

टोहाना। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के 106वें जन्मदिन के अवसर पर प्रेक्षा वाहिनी के निर्देशन में स्थानीय तेरापंथ भवन में प्रेक्षाध्यान मासिक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से किया गया। इसके पश्चात सामूहिक रूप से प्रेक्षाध्यान गीत का संगान किया गया। उसके पश्चात कायोत्सर्ग के प्रयोग किए गए। प्रेक्षा वाहिनी संवाहिका उषा जैन ने कहा कि प्रेक्षाध्यान चित्त समाधि, चित्त शुद्धि तथा आत्मा की निर्मलता के लिए एक अनुपम उपहार है। इसके प्रतिदिन प्रयोग करने से आत्मा तथा शरीर निरामय बनते हैं तथा आधि, व्याधि तथा उपाधि क्षीण होते हैं। इसके पश्चात आचार्य महाप्रज्ञ जी का रिकॉर्डिंग प्रवचन श्रवण किया गया। कार्यक्रम के अंत में 9 मंगल भावनाओं का ध्यान किया गया। इस कार्यक्रम में तेरापंथ सभा अध्यक्ष विजय जैन, मंत्री सुभाष जैन, वरिष्ठ श्रावक जोगीराम जैन, प्रमोद जैन, सहित अन्य लोगों ने सहभागिता की।

अध्यात्म से अनुप्राणित था आचार्य श्री महाप्रज्ञ का जीवन

राजसमन्द। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का 106वां जन्मदिवस अणुव्रत भवन, राजसमंद में साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी के सान्निध्य में श्रद्धा और प्रेरणा के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता भिक्षु बोधि स्थल के अध्यक्ष हर्षलाल नवलखा ने की, जबकि मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. महेंद्र कर्णावट ने संबोधित किया। साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी एक महान साहित्यकार थे, जिनका जीवन पूर्णतः अध्यात्म से अनुप्राणित था। महाप्रज्ञ वाङ्मय में कई ऐसे ग्रंथ हैं जिनका स्वाध्याय करने से चेतना जागृत हो सकती है और जीवन शैली में सकारात्मक परिवर्तन आ सकता है। उन्होंने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा दिया गया अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान और अध्यात्म जगत में उनका योगदान मानवता के लिए अमूल्य धरोहर है। साध्वी अनुप्रेक्षाश्री जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ की अंतःप्रज्ञा जाग्रत थी। उन्होंने अपनी प्रखर प्रज्ञा से न केवल अनेक जनों में चेतना का संचार किया बल्कि श्रुत और व्रत चेतना को भी जागृत किया। साध्वी समंतप्रभा जी ने आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन को श्रद्धा, समर्पण और विनम्रता की अनुपम गाथा बताया। मुख्य वक्ता डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने मुनि नथमल से आचार्य महाप्रज्ञ बनने तक की संपूर्ण जीवन यात्रा को प्रेरणास्पद ढंग से प्रस्तुत किया। उन्होंने आचार्य श्री के जीवन दर्शन को गहराई से समझाने का प्रयास किया। इस अवसर पर जिनल डूंगरवाल, सभा अध्यक्ष हर्षलाल नवलखा, चतुर कोठारी, अचल धर्मावत, सुधा कोठारी, प्रमोद कावड़िया, दिव्यांश चव्हाण, मुमुक्षु छवि जोगड़ सहित अनेक वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन भिक्षु बोधि स्थल के सहमंत्री भूपेश धोका ने किया तथा आभार ज्ञापन अणुव्रत भवन अध्यक्ष ललित बडोला द्वारा किया गया।

महाप्रज्ञ की निर्मल प्रज्ञा से संघ, देश और विश्व हुए लाभान्वित

चंडीगढ़। आचार्य महाप्रज्ञजी केवल एक जीवित किंवदंती नहीं, बल्कि एक उद्देश्य हैं। वे न केवल एक विश्वास हैं, बल्कि विश्वास की परिभाषा स्वयं हैं। उनका अस्तित्व किसी समय या क्षेत्र की सीमा में नहीं बंध सकता। उन्हें लोकप्रिय रूप से 'मोबाइल विश्वकोश' कहा गया, वे ज्ञान का अनंत खजाना थे। प्रख्यात कवि रामधारी सिंह दिनकर ने उन्हें 'भारत का दूसरा विवेकानंद' कहकर संबोधित किया। वे केवल ज्ञान के भंडार नहीं थे, बल्कि स्वयं एक महान स्रोत थे। जैसे किसी जल स्रोत के समीप जल सदैव ताजा और निर्मल होता है, उसी प्रकार आचार्य महाप्रज्ञजी का चिंतन हर क्षण नवीन प्रेरणा देता था। ऐसे स्रोत में अकेले असंख्य व्यक्तियों की प्यास बुझाने की क्षमता होती है। आश्चर्यजनक रूप से, उन्होंने केवल ज्ञान से प्यास शांत नहीं की, बल्कि लोगों में ज्ञान की प्यास भी जगाई। उनके चिंतन की गहराई से उत्पन्न विचार मंथन प्रभावी और स्थायी होता था।

ये विचार मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने अणुव्रत भवन तुलसी सभागार में, आचार्य महाप्रज्ञजी के जन्मदिवस पर उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ की निर्मल प्रज्ञा से संघ, देश और विश्व लाभान्वित हुए। इसी कारण, विक्रम संवत 2035 (12 नवंबर 1978) को गंगाशहर में उन्हें 'महाप्रज्ञ' की उपाधि से अलंकृत किया गया। आचार्य महाप्रज्ञ मानवतावादी नेता, आध्यात्मिक गुरु और शांति के राजदूत थे। वे जैन धर्म के श्वेतांबर तेरापंथ संप्रदाय के दशमाचार्य थे। वे एक आदरणीय संत, योगी, दार्शनिक, लेखक, संचालक और कवि के रूप में प्रतिष्ठित रहे।

विनय – समर्पण की प्रतिमूर्ति आचार्यश्री महाप्रज्ञ

नाथद्वारा। नाथद्वारा स्थित तेरापंथ भवन में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के जन्म दिवस के पावन अवसर पर आयोजित धर्मसभा का आयोजन साध्वी रचनाश्री जी के सान्निध्य में गरिमापूर्वक संपन्न हुआ। साध्वी रचनाश्री जी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी एक विलक्षण व्यक्तित्व के धनी थे, जिनमें समर्पण और विनय का अनुपम समन्वय था। उनका जीवन गुरु और शिक्षा के प्रति अनन्य आस्था और समर्पण का प्रतीक रहा। बाल्य मुनि अवस्था में ही उन्होंने यह दृढ़ संकल्प लिया था कि कोई ऐसा कार्य नहीं करेंगे जो उनके गुरु को अप्रिय लगे।

साध्वीश्री ने बताया कि उन्हें उनकी माता से प्रारंभ से ही आध्यात्मिक संस्कार प्राप्त हुए। टमकोर में मुनि छबील जी स्वामी से प्रेरणा प्राप्त कर उन्होंने अध्यात्म का मार्ग चुना और तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षा ली। प्रारंभ में वे अज्ञ थे, फिर विज्ञ बने, तत्पश्चात विशेषज्ञ और अंततः 'महाप्रज्ञ' के रूप में प्रतिष्ठित हुए। उनके प्रवचन सरल, सरस और प्रभावशाली होते थे, जिससे प्रत्येक श्रोता को ऐसा प्रतीत होता था मानो वह प्रवचन विशेष रूप से उसी के लिए हो। इस अवसर पर साध्वी प्राज्ञप्रभा जी ने शासन माता द्वारा रचित कविता का भावपूर्ण पाठ किया। साध्वीवृंद द्वारा सामूहिक गीत प्रस्तुत किया गया। महासभा सदस्य कांतिलाल धाकड़, महिला मंडल अध्यक्षा मंजू पोरवाल एवं फतेहचंद बोहरा ने भी अपने भाव प्रकट किए। कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण से हुई। संचालन साध्वी गीतार्थप्रभा जी ने किया।

'यादें महाप्रज्ञ जी की' में गूंजे भक्ति स्वर

विजयनगर। प्रेक्षाप्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञजी की 106वीं जन्म जयंती के पावन अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद्, विजयनगर द्वारा 'भव्य भक्ति संध्या - यादें महाप्रज्ञ जी की' का आयोजन एम.सी. लेआउट स्थित रोशनलाल, दिनेश एवं राकेश पोखरणा के निवास प्रेमरोशन में भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी संयमलता जी द्वारा मंगल मंत्रोच्चार के साथ हुआ। साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के तप, ज्ञान और करुणा से परिपूर्ण जीवन पर प्रकाश डालते हुए, उनकी शिक्षाओं को आत्मसात करने का आह्वान किया। साथ ही पोखरणा परिवार की संघ भक्ति एवं गुरु भक्ति की सराहना की। तेयुप अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा ने सभी का स्वागत करते हुए गुरुदेव महाप्रज्ञ जी के जन्मोत्सव पर अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। कार्यक्रम की मुख्य विशिष्टता रही प्रसिद्ध गायक ऋषि दुगड़ की संगीतमय प्रस्तुति, जिन्होंने अपनी मधुर वाणी से उपस्थित जनसमूह को भावविभोर कर दिया। साथ ही विजय स्वर संगम टीम की प्रस्तुति भी विशेष आकर्षण का केंद्र रही। कार्यक्रम में निधि चावत, नमन चावत, प्रकाश गांधी, राकेश दूधोड़िया, सम्पत चावत, प्रेम भंसाली, महेन्द्र टेबा, टीपीएफ राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत एवं उपासक अरविंद मांडोत ने अपने विचार व्यक्त किए। इस आयोजन को सफल बनाने में तेयुप विजयनगर प्रबंध मंडल सहित पूरी कार्यकारिणी का सराहनीय योगदान रहा।कार्यक्रम में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, प्रेक्षा फाउंडेशन एवं अणुव्रत समिति का सहयोग भी उल्लेखनीय रहा।कार्यक्रम के अंत में सभी अतिथियों का आभार दिनेश पोखरणा द्वारा व्यक्त किया गया तथा संचालन विकास बांठिया ने किया।

व्यापक चिंतन के धनी थे आचार्यश्री महाप्रज्ञ

साल्टलेक। मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की 106वीं जन्म जयंती प्रज्ञा दिवस के रूप में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, साल्टलेक द्वारा राजरहाट स्थित सिल्वर ऑक कम्युनिटी हॉल में आयोजित की गई। इस अवसर पर मुनिश्री ने उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित करते हुए कहा, आचार्य महाप्रज्ञ जी जैन शासन के ज्योतिर्धर पुरुष थे। वे प्रगतिशील धर्मसंघ के दसवें अधिशास्ता और आचार्य श्री तुलसी के सक्षम पट्टधर थे। उनकी बुद्धि विलक्षण और व्यक्तित्व विशिष्ट था। वे जैन न्याय के राधाकृष्णन और आधुनिक युग के द्वितीय विवेकानंद थे। उन्होंने आगे कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी ने अपने कर्तृत्व, व्यक्तित्व, साधना एवं ज्ञान के माध्यम से न केवल जैन और तेरापंथ समाज का बल्कि संपूर्ण मानवता का उत्थान किया। वे एक महान साहित्यकार, प्रवचनकार, कुशल प्रशासक, योगी, व्यापक चिंतन के धनी एवं भविष्यद्रष्टा थे। गुरुदेव तुलसी की सान्निध्य में उन्होंने आगम संपादन कार्य प्रारंभ कर जिन शासन की अनुपम सेवा की। मुनि श्री ने आगे कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी एक आलोकपुंज और सकारात्मक सोच के धनी व्यक्ति थे। उनका अध्ययन गहराई से भरा हुआ था और वे अंतरराष्ट्रीय स्तर के दार्शनिक मनीषी थे। कार्यक्रम का शुभारंभ राजरहाट क्षेत्र की बहनों द्वारा मंगलाचरण से हुआ। मुनि कुणाल कुमार जी ने भावपूर्ण गीत की प्रस्तुति दी। प्रेक्षा प्रशिक्षिकाओं द्वारा सुमधुर गीत का संगान किया गया। इस अवसर पर साल्टलेक सभा अध्यक्ष जयसिंह डागा, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की संगठन मंत्री रमण पटावरी एवं गुलाब चोरड़िया ने भी अपने विचार रखे। आभार प्रदर्शन सभा मंत्री अशोक भूतोडिया ने किया एवं कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी द्वारा किया गया।

निर्मलता, निश्छलता और सहजता का बहता दरिया

झकनावदा। साध्वी पंकजश्री जी के सान्निध्य में प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का 106वां जन्मदिवस श्रद्धा व उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर साध्वी श्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी निर्मलता, निश्छलता और सहजता का बहता दरिया थे। वे ऋजुता और प्रज्ञा के प्रतीक थे, ज्ञान के अगाध सागर थे। अपने गुरु के प्रति उनका समर्पण असीम था, और आर्ष वाणी उनकी प्राण ऊर्जा। उनका साहित्य मानवता को सदियों तक पथदर्शन देता रहेगा। उनका हर जन्मदिन ऊर्जा व शक्ति का आदित्य बनकर उदित होता है। झकनावदा के श्रावकगण अत्यंत भाग्यशाली हैं जो ऐसे महापुरुष की जन्मजयन्ति मना रहे हैं। साध्वी शारदाप्रभा जी ने प्रेक्षाध्यान का प्रयोग कराया और कहा कि गुरुदेव का जन्म खुले आकाश में हुआ और उनका मन भी उसी आकाश की भाँति विशाल था।

आचार्य श्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष पर विशेष

कल्पतरु पुरुष – आचार्य श्री भिक्षु

● डा. मुनि मदन कुमार ●

गतांक से आगे...

तत्त्व चिंतन आत्मोदय का हेतु है। आचार्य श्री भिक्षु ने तात्त्विक विमर्श कर महान उपकार किया है। उनके साहित्य और चिंतन में तत्त्व की प्रधानता है और उसमें दृष्टि-परिमार्जन की अपार क्षमता है। तात्त्विक चिंतन के कुछ बिंदु यहाँ प्रस्तुत हैं –

1. भगवान महावीर ने गोशालक को बचाया – यह सावद्य अनुकंपा है, राग भाव है, अशुभ लेश्या का प्रयोग है तथा छद्मस्थ अवस्था की भूल है। अन्य लोग मानते हैं कि भगवान ने गोशालक को बचाया – यह धर्म है।

2. छठे गुणस्थान – प्रमत्त संयत गुणस्थान में छहों लेश्याएं होती हैं। साधु के कदाचित अशुभ लेश्या और अशुभ योग दोनों होते हैं। अन्य लोग मानते हैं कि साधु में अशुभ लेश्या नहीं होती है।

3. बाल तप – मिथ्यात्वी की तपस्या निरवद्य है और मोक्ष का हेतु है। अन्य लोग मानते हैं कि बाल तप सावद्य है और संसार का कारण है।

4. मिथ्या दृष्टि की सकाम और अकाम – दोनों प्रकार की निर्जरा हो सकती है। अन्य लोग मानते हैं कि मिथ्या दृष्टि की केवल अकाम निर्जरा ही होती है, सकाम निर्जरा नहीं।

5. मिथ्यात्वी की तपस्या जिनाज्ञा में है। अन्य लोग मानते हैं कि मिथ्यात्वी की तपस्या जिनाज्ञा के बाहर है, मिथ्यात्वी के तप नहीं होता है।

6. निर्जरा भगवान की आज्ञा में है, चाहे वह सकाम हो या अकाम। अन्य लोग मानते हैं कि अकाम निर्जरा आज्ञा में नहीं है। अकाम निर्जरा को वे सावद्य मानते हैं।

7. तामली तापस मोक्ष का देशाराधक है। अन्य लोग मानते हैं कि तामली तापस मोक्ष का देशाराधक नहीं है। वे मिथ्यात्वी को मोक्ष का देशाराधक नहीं मानते हैं।

8. मिथ्यात्वी के ही संसार परित होता है। जैसे मेघकुमार के जीव ने हाथी के भव में मिथ्यात्व दशा में संसार परित किया। अन्य लोग मानते हैं कि सम्यक्त्वी के ही संसार परित होता है। वे मेघकुमार के जीव को हाथी के भव में सम्यक्त्वी मानते हैं।

9. अनुकंपा – सावद्य और निरवद्य दोनों प्रकार की होती है। अन्य लोग मानते हैं कि अनुकंपा सावद्य नहीं होती है।

10. धर्म-दान के अलावा सारे दान सावद्य हैं और अधर्म हैं। अन्य लोग मानते हैं कि नौ दान अधर्म-दान नहीं हैं। अनुकंपा दान सावद्य है और उससे पाप का बंध होता है। अन्य लोग मानते हैं कि अनुकंपा दान निरवद्य है तथा उससे साता वेदनीय – पुण्य का बंध होता है।

11. निर्जरा के साथ पुण्य का बंध होता है। अतः शुभ योग – निर्जरा और आश्रव दोनों है। पुण्य स्वतंत्र बंध नहीं होता। अन्य लोग मानते हैं कि निर्जरा के साथ ही पुण्य-बंध का कोई नियम नहीं है।

12. श्रावक के अव्रत की अप्रत्याख्यान की क्रिया लगती है क्योंकि वह देशविरत है, सर्वविरत नहीं है। श्रावक व्रताव्रती और बाल-पंडित है, अतः उसके अव्रत आश्रव रहता है। अन्य लोग मानते हैं कि श्रावक को अव्रत की – अप्रत्याख्यान की क्रिया नहीं लगती है।

13. पंच परमेष्ठी ही वंदनीय हैं। श्रावक और प्रतिमाधारी वंदनीय नहीं हैं। अन्य लोग मानते हैं कि पंच परमेष्ठी के अलावा भी वंदनीय हैं – गुणवान पुरुष वंदनीय हैं।

14. आश्रव जीव है और कर्मग्रहण का आत्म-परिणाम है। आत्मा का परिणाम आत्मा है, जीव है। अन्य लोग मानते हैं कि आश्रव – जीव और अजीव दोनों हैं।

15. पुण्य, पाप और बंध – अजीव हैं। ये पुद्गल की पर्याय हैं, अतः पुद्गल हैं और अजीव हैं। अन्य लोग मानते हैं कि पुण्य, पाप और बंध – जीव-अजीव दोनों हैं।

16. शुभ योग – आश्रव और निर्जरा है। शुभ योग से पुण्य का बंध होता है, अतः आश्रव है तथा शुभ योग से पूर्व संचित कर्म क्षीण होते हैं, अतः निर्जरा है। किन्तु शुभ योग – संवर नहीं है। अन्य लोग शुभ योग को संवर मानते हैं। वे अशुभ योग को आश्रव और शुभ योग को संवर मानते हैं।

17. पहले गुणस्थान का नाम मिथ्यादृष्टि गुणस्थान है। वह क्षायोपशमिक भाव होने से निरवद्य है। मिथ्यात्वी में पाई जाने वाली दृष्टि विषयक आत्म-विशुद्धि – मिथ्यादृष्टि गुणस्थान है। अन्य लोग पहले गुणस्थान का नाम मिथ्यात्व गुणस्थान कहते हैं तथा उसे सावद्य मानते हैं।

18. योग के दो प्रकार हैं – शुभ और अशुभ। ये दोनों पृथक-पृथक हैं। इन दोनों का मिश्रण नहीं होता है। अर्थात मिश्र-योग नहीं होता, मिश्र-क्रिया भी नहीं होती है, मिश्र-बंध भी नहीं होता है, मिश्र-धर्म भी नहीं होता है। अन्य लोग मिश्र-धर्म मानते हैं। किसी सूत्र में मिश्र-धर्म नहीं है। कई अन्य लोग असंयमी जीवों के पोषण में पुण्य मानते हैं और कई मिश्र मानते हैं। ये दोनों ही मान्यता वाले सम्यक्त्व से रहित हैं।

19. आत्म-रक्षा दया है। जीव-रक्षा या प्राण-रक्षा प्रासंगिक है, मुख्य नहीं। अपनी आत्मा को असत् प्रवृत्ति से बचाना ही दया है। किसी के जीवन को बचाना मोहानुकंपा है – वह सावद्य है। असंयमी के जीने की वांछा करना राग है, धर्म नहीं है। अन्य लोग जीव-रक्षा, जीव-दया, प्राण-रक्षा आदि को प्रधानता देते हैं – यह आगम अनुमोदित नहीं है।

20. गृहस्थ को सूत्र पढ़ने की जिनाज्ञा नहीं है। सूत्र पढ़ने की आज्ञा केवल साधु को ही है। अन्य लोग गृहस्थ को सूत्र सिखाते हैं – यह जिनाज्ञा के बाहर है।

21. देवगति और नरकगति में जीव के दो भेद पाए जाते हैं – तेरहवाँ और चौदहवाँ। संज्ञी जीवों में ये दो भेद पाए जाते हैं। संज्ञी जीवों में असंज्ञी जीवों के भेद नहीं पाए जाते हैं। अन्य लोग देवगति और नरकगति में जीव के तीन भेद मानते हैं – ग्यारहवाँ, तेरहवाँ और चौदहवाँ। यह न्यायसंगत नहीं है।

22. स्थानांग में पुण्य तत्व के नौ भेद बताए गए हैं – अन्न पुण्य आदि। शुद्ध साधु को कल्पनीय व्यक्ति द्वारा कल्पनीय आहार देने से निर्जरा होती है तथा सहचर रूप में होने वाले पुण्य-बंध को अन्न पुण्य कहते हैं। यहाँ संयम का पोषण है, अतः निर्जरा और अन्न पुण्य दोनों होते हैं। अन्य लोग असंयमी प्राणी को देने में भी अन्न पुण्य मानते हैं – यह आगम सम्मत नहीं है।

23. सुपात्र दान (संयमी दान) से होने वाले शुभ कर्म-बंध को अन्न-पुण्य कहा है। पंच परमेष्ठी को नमस्कार करने से होने वाले शुभ कर्म-बंध को नमस्कार पुण्य कहा है। ये कार्य जिनाज्ञा के अंतर्गत हैं। अन्य लोग भूखे (गरीब, अनाथ, क्षुधातुर आदि) को भोजन देने में पुण्य कहते हैं – तो इन्हें नमस्कार करने में नमस्कार पुण्य क्यों नहीं?

24. वास्तव में हर व्यक्ति को धर्म (निर्जरा) करने का अधिकार है। तेरापंथ की मान्यता है कि मिथ्यात्वी व्यक्ति भी यदि सकारात्मक सत्क्रिया करता है, तो उसे धर्म होता है। किन्तु अन्य लोग मानते हैं कि मिथ्यात्वी व्यक्ति चाहे शील, सत्य और तप का आचरण क्यों न करता हो, वह सब धर्म का हेतु न होकर भव-बंधन का हेतु ही होता है। वे मिथ्यात्वी की हर धार्मिक क्रिया को भववर्धक मानते हैं।

25. प्रमाद आश्रव का अर्थ है – धर्म के प्रति उत्साह की कमी। यहाँ पर योग रूप प्रमाद को ग्रहण नहीं करना चाहिए। वस्तुतः छठे गुणस्थान तक निरंतर प्रमाद आश्रव रहता है। अन्य लोग प्रमाद-आश्रव के अंतर्गत मद्य, विषय, कषाय, निद्रा और विकथा रूप योग को ग्रहण करते हैं – यह यौक्तिक नहीं है।

26. अपनी आत्मा को असत् प्रवृत्ति से और पाप कर्म से बचाना – धर्म है। यह दया है। चींटी का बचना दया नहीं है – वह प्रासंगिक है। चींटी को बचाने के लिए प्रयत्न करना – रागात्मकता है, रागात्मकता धर्म नहीं है, मोक्ष मार्ग नहीं है।

27. भगवती सूत्र में 'अल्प पाप और बहुत निर्जरा' का सिद्धांत निरूपित है। यहाँ पर अल्प का अर्थ 'थोड़ा' न होकर 'निषेधात्मक' है। अर्थात साधु यदि अनजान में अशुद्ध आहार आदि ग्रहण करे या भोग ले तो उसे पाप नहीं लगता, केवल निर्जरा ही होती है। अन्य लोग इस सिद्धांत को आधार बनाकर विषम स्थिति में अनेषणीय (अकल्पनीय) ग्रहण करने की स्थापना करते हैं तथा उसमें दान ग्रहण करने वाले साधु और दानदाता श्रावक को थोड़ा पाप और बहुत निर्जरा मानते हैं – यह मान्यता सिद्धांत-सम्मत नहीं है। -इति

स्वर्णाक्षरों में अंकित एक नाम – आचार्य भिक्षु

● मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ●

तीन सौ वर्ष पूर्व जिस व्यक्ति ने जन्म लिया था और जिसका नाम आज भी इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्णाक्षरों में अंकित है, जिनकी साधना और आराधना आज भी प्रेरणा और स्फूर्ति प्रदान कर रही है — इसका अर्थ है कि वह एक असाधारण व्यक्तित्व के धनी थे। सचमुच, वह एक महापुरुष थे, जिनके पदचिन्हों पर लाखों-लाखों व्यक्ति चलने को आतुर हैं। जिनकी वाणी में अमरत्व का संदेश है, ऐसे महापुरुषों का व्यक्तित्व और कर्तृत्व सदैव भवी जीवों के लिए मार्गदर्शक होता है। वे जीवन नैया को पार लगाने की एक मजबूत पतवार के समान हैं, जिसके सहारे संसार-सागर को पार किया जा सकता है।

वह व्यक्तित्व भिक्षु नाम से विश्रुत है। नाम था जिनका 'भीखण'। जिन्होंने गृहस्थ जीवन में कुछ समय बिताने के बाद वैराग्य भाव जाग्रत किया और संयम पथ पर अग्रसर होने के लिए तैयार हो गए। भरी जवानी में पत्नी का वियोग, नश्वरता का अवबोधन और फिर वह कल्याण मार्ग की ओर चलने के लिए लालायित हो गए। माता के मन में पुत्र के मोह की चेतना उन्हें रोक रही थी। उन्होंने माता को न केवल समझाया, बल्कि भावी जीवन के लिए व्यवस्था भी सुनिश्चित की। अंततः मां की आज्ञा प्राप्त हुई और उन्होंने दीक्षा स्वीकार कर साधना के मार्ग पर कदम बढ़ाया। महावीर की वाणी को आधार बनाकर आगम वाणी का वाचन, पठन और मनन प्रारंभ हुआ।

कुछ जिज्ञासाएं उभरीं। समाधान स्वयं खोजा, गुरु के समक्ष जिज्ञासाएं रखीं, परंतु संतोषजनक उत्तर नहीं मिला। संकल्प-विकल्प चलते रहे। अंततः सटीक चिन्तन, निर्णय और क्रियान्विति के लिए तत्पर हो गए। मन में एक ही भावना थी कि जिस उद्देश्य से घर-बार छोड़ा है, उस उद्देश्य की पूर्ति करनी है। यद्यपि जानते थे कि शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक कष्ट आएंगे, लेकिन कष्टों से घबराना कायरता का प्रतीक होता है। यदि कष्ट आएंगे, तो आएंगे, पर मुझे अपना सम्यक् चुनाव कर आगे बढ़ना होगा। आगम वाणी के आधार पर 'जं खेयं तं समायरे' — जो श्रेयस्कर है, उसका ही आचरण करना है।

अभिनिष्क्रमण कर वे साधना के मार्ग पर चल पड़े। आहार और स्थान संबंधी अनेक कष्ट आए, मानसिक कष्ट भी झेले, पर वे निश्चिंत होकर चलते रहे। योग ऐसा बना कि स्वयं की साधना के साथ-साथ परकल्याण के भी योग बने। सहज योग से काफिला जुड़ता गया। पंथ का निर्माण हुआ, नाम मिला 'तेरापंथ' — अर्थात् हे प्रभो! आपका पंथ, हम हैं आपके पथिक।

जहां संघ होता है, वहां मर्यादाएं, अनुशासन, व्यवस्था और आज्ञा भी होती है। मर्यादाएं बनीं, पर थोपी नहीं गईं — सहज मन से स्वीकृत की गईं। थोपा हुआ नियम कानून होता है, मर्यादा वह होती है जो सहज स्वीकृति से स्वीकार की जाए — तभी उसकी पालना संभव होती है। आचार्य भिक्षु विलक्षण प्रतिभा के धनी और दूरदर्शी आचार्य थे। उन्होंने भावी को समझते हुए मर्यादाएं बनाईं और आज भी वे मर्यादाएं अक्षुण्ण रूप से पालन हो रही हैं। भावी की डोर उत्तरवर्ती आचार्यों को सौंप दी। जैसा उपयुक्त समझें, परिवर्तन या संशोधन का अधिकार आचार्य के पास हो — यह व्यवस्था बनाई।

वर्तमान में आचार्य श्री महाश्रमण जी ग्यारहवें अनुशास्ता हैं, जिनके नेतृत्व में आचार्य श्री भिक्षु का 300वां जन्मदिवस संघ द्वारा भव्य रूप में मनाया जा रहा है। मैं इस अवसर पर अपना सर्वस्व समर्पण आचार्य भिक्षु एवं तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अनुशास्ता के श्रीचरणों में अर्पित कर, साधना के मार्ग पर अग्रसर होता रहूं — यही मेरी अंतः भावना है।

पुनः-पुनः आचार्य श्री भिक्षु की वह संयममयी उत्कृष्ट साधना हमारे जीवन को आलोकित करती रहे और अंत में अंतिम लक्ष्य — सिद्धगति, मोक्ष — की प्राप्ति की प्रबल भावना बनी रहे।

संबोधि

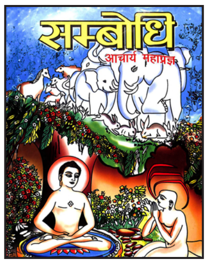

मनः प्रसाद

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

६. समितो मनसा वाचा, कायेन भव सन्ततम्।
गुप्तश्च मनसा वाचा, कायेन सुसमाहितः॥

तू मन, वचन और काया से निरन्तर समित-सम्यक् प्रवृत्ति करने वाला तथा मन, वचन और काया से गुप्त और सुसमाहित बन।

निवृत्ति अक्रिया जीवन का साध्य है। प्रवृत्ति साध्य नहीं, किन्तु जीवन की सहचरी है। कोई भी व्यक्ति शरीर की विद्यमानता में पूर्ण निवृत्त नहीं हो पाता। प्रवृत्ति का पहला चरण है कि वह प्रवृत्ति सुप्तदशा-यांत्रिक दशा में न हो, पूर्ण होश सजगतापूर्वक हो। प्रवृत्ति में होने वाली गन्दगी, अशुद्धि को सावधानता जला डालती है, वह उसे सम्यग् बना देती है। सजगता के अभाव में प्रवृत्ति के साथ क्रिया तन्मय होकर गन्दगी ले आती है। व्यक्ति का विवेक नष्ट हो जाता है। प्रवृत्ति का दूसरा चरण है प्रवृत्ति को निवृत्ति में बदलना।

गुप्ति है गोपन, संवरण। शरीर को स्थिरकर, मन को शांत कर, मौन होकर कुछ समय के लिए प्रवृत्ति को विश्राम देना, जिससे उस अक्रिय आत्मा की झांकी प्रतिबिंबित हो सके।

७. अनुत्पन्नानकुर्वाणः, कलहांश्च पुराकृतान्।
नयन्नुपशमं नूनं, लप्स्यसे मनसः सुखम्॥

तू नये सिरे से कलहों को उत्पन्न मत कर और पहले किए हुए कलहों को उपशांत कर, इस प्रकार तुझे मानसिक सुख प्राप्त होगा।

८. क्रोधादीन् मानसीन् वेगान्, पृष्ठमांसादनं तथा।
परित्यज्याऽसहिष्णुत्वं, लप्स्यसे मनसः स्थितिम्॥

क्रोध आदि मानसिक वेगों तथा चुगली और असहिष्णुता को छोड़, इस प्रकार तुझे मन की स्थिरता प्राप्त होगी।

जार्ज गुरजिएफ ने कहा है- 'तुमने जो पाप किए हैं इनके कारण परमात्मा तुम्हें नरक नहीं भेज सकता, क्योंकि ये सब तुमने बेहोशी में किए हैं। बेहोश को अदालत भी माफ कर देती है।' महावीर ने मेघ को शंतिसूत्र दिया है-वर्तमान क्षण में जीना 'खणं जाणाहि पंडिए।' आदमी जीते हैं अतीत और भविष्य में। स्मृति और कल्पना में जीने का अर्थ है-बेहोशी प्रमाद में जीना। **'समयं गोयम मा पमायए'- महावीर का यह जागरूकता अप्रमत्तता का सन्देश लाखों, करोड़ों व्यक्तियों की जबान पर है, किन्तु कितने व्यक्तियों के जीवन का स्पर्श कर रहा है यह कहना कठिन है।** वर्तमान या होश में जीने का अर्थ है-भविष्य में पाप का न होना। जो साधक मन के प्रति और शरीर के प्रति जागृत रहता है वह अंतर में उठनेवाली असत् तरंगों का वहीं निर्मूलन कर देता है, बाहर प्रकट नहीं होने देता और सतत शुभ भावों, संकल्पों से स्वयं को प्रभावित रखता है। क्रोधादि वेगों का प्रभाव बेहोशी में ही होता है।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

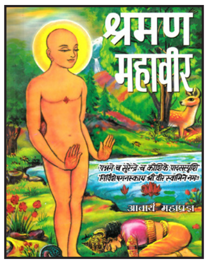

तत्कालीन धर्म और धर्मनायक

भगवान् पार्श्व ने सामायिक चारित्र का प्रतिपादन किया था। उनके संघ में सम्मिलित होने वाले समता की साधना का व्रत लेते थे। उनके सामायिक के चार अंग थे-

१. अहिंसा

२. सत्य

३. अचौर्य

४. बाह्यादान (परिग्रह) विरमण।

भगवान् महावीर ने देखा भगवान् पार्श्व के श्रमण ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह के सम्बन्ध में शिथिल दृष्टिकोण अपनाते जा रहे हैं। भगवान् पार्श्व द्वारा प्रदत्त पूर्व-ज्ञान का प्रयोग चमत्कार-प्रदर्शन में कर रहे हैं। साधना-काल में भगवान को ऐसे अनेक अनुभव हुए थे। मंक्खलिपुत्त गोशालक को अष्टांग-निमित्त की शिक्षा देने वाले श्रमण भगवान् पार्श्व की परम्परा में ही दीक्षित हुए थे। उनके नाम हैं-शाण, कलंद, कर्णिकार, अच्छिद्र, अग्निवैश्यायन और गोमायुपुत्र अर्जुन। वे सुख-दुःख, लाभ-अलाभ और मृत्यु के रहस्यों के पारगामी विद्वान् थे। उनकी भविष्यवाणी बड़ी चमत्कारपूर्ण होती थी वे भगवान् पार्श्व के शासन से पृथक् होकर अष्टांग-निमित्त से जीविका चलाते थे।

भगवान् महावीर इन सारी परिस्थितियों का अध्ययन कर इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि वर्तमान परम्परा में नया प्राण फूंके बिना उसे सजीव नहीं बनाया जा सकता।

नई स्थापनाएं : नई परम्पराएं

भगवान् महावीर ने समता धर्म को वही प्रतिष्ठा दी जो भगवान् पार्श्व ने दी थी। भगवान् ने दीक्षा का प्रारम्भ समता के संकल्प से ही किया और कैवल्य प्राप्त कर सबसे पहले समता धर्म की व्याख्या की। उनके गणधरों ने सर्वप्रथम समता के प्रतिनिधि गन्थ सामायिक सूत्र की रचना की। किन्तु भगवान् ने परिस्थिति के संदर्भ में सामायिक का विस्तार कर दिया। सामायिक के तीन प्रकार हैं-

१. सम्यक्त्व सामायिक-सम्यग् दर्शन।

२. श्रुत सामायिक-सम्यग् ज्ञान।

३. चारित्र सामायिक-सम्यक् चारित्र

भगवान् महावीर को सम्यक् दर्शन और सम्यक् ज्ञान में कोई परिवर्तन करना आवश्यक प्रतीत नहीं हुआ। उन्होंने केवल चारित्र सामायिक का विकास किया।

भगवान् महावीर ने चार महाव्रतों का विस्तार कर उनकी संख्या पांच कर दी। जैसे-

१. अहिंसा

२. सत्य

३. अचौर्य

४. ब्रह्मचर्य

५. अपरिग्रह।

भगवान् ने जितना बल अहिंसा पर दिया, उतना ही बल ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह पर दिया। उनकी वाणी पढ़ने वाले को इसकी प्रतिध्वनि पग-पग पर सुनाई देती है।

भगवान् ने कहा- 'जिसने ब्रह्मचर्य की आराधना कर ली, उसने सब व्रतों की आराधना कर ली। जिसने ब्रह्मचर्य का भंग कर दिया, उसने सब व्रतों का भंग कर दिया।

जो अब्रह्मचर्य का सेवन नहीं करते, वे मोक्ष जाने वालों की पहली पंक्ति में हैं।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री रायचंद जी युग

साध्वीश्री गेनांजी (लाडनूं) दीक्षा क्रमांक 124

साध्वीश्री दीर्घ तपस्विनी थी। ख्यात में लिखा है कि आपने ३ बार सं. 1912, 1914, 1915 में छहमासी तप किया। एक बार चौमासी और अनेक बार मासखमण की तपस्या की। अन्य तप का वहां और कोई उल्लेख प्राप्त नहीं है।

– साभारः शासन समुद्र –

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

समता का शास्त्र

खणं जाणाहि पंडिए– हे पंडित! तू क्षण को जान।

वयो अच्चेइ जोव्वणं च– अवस्था बीत रही है और यौवन चला जा रहा है।

णो हव्वाए णो पाराए– वे न इस तीर पर आ सकते हैं और न उस पार जा सकते हैं।

सव्वेसिं जीवियं पिय– सब प्राणियों को जीवन प्रिय है।

तीसरे अध्ययन का नाम शीतोष्णीय है। इसके कुछ सूक्त इस प्रकार हैं-

सुत्ता अमुणी सया, मुणिणो सया जागरंति– अज्ञानी सदा सोते हैं, ज्ञानी सदा जागते हैं।

लोयंसि जाण अहियाय दुक्खं– तुम जानो-इस लोक में अज्ञान अहित के लिए होता है।

जागरवेरोवरए वीरे– जागृत और वैर से उपरत व्यक्ति वीर होता है।

आरंभजं दुक्खमिणं ति णच्चा– दुःख हिंसा से उत्पन्न है।

माई पमाई पुणरेइ गब्भं– मायी और प्रमादी मनुष्य बार-बार जन्म लेता है।

आरंभजीवी उ भयाणुपस्सी– आरंभजीवी मनुष्य को भय का दर्शन होता रहता है।

समत्तदंसी ण करेति पावं– समत्वदर्शी पाप नहीं करता।

अग्गं च मूलं च विगिंच धीरे– हे धीर! तू दुःख के अग्र और मूल का विवेक कर।

सच्चंसि धितिं कुव्वह– सत्य में धृति कर।

अणेगचित्ते खलु अयं पुरिसे– यह पुरुष अनेक चित्त वाला है।

णिव्विंद णंदि अरते पयासु– तू (कामभोग के) आनन्द से उदासीन बन। स्त्रियों में अनुरक्त मत बन।

सीओसिणच्चाई से निग्गंथे– निर्ग्रन्थ सर्दी और गर्मी को सहन करता है।

समयं तत्थुवेहाए अप्पाणं विप्पसायए– समता का आचरण कर अपने आपको प्रसन्न करो।

जे एगं जाणइ, से सव्वं जाणइं– जो एक को जानता है, वह सबको जानता है।

सव्वतो पमत्तस्स भयं– प्रमत्त व्यक्ति को सब ओर से भय होता है।

सड्ढी आणाए मेहावी– आज्ञा में श्रद्धा करने वाला मेधावी होता है।

चौथे अध्ययन का नाम सम्यक्त्व है। इसके कुछ सूक्त इस प्रकार हैं—

णो लोगस्सेसणं चेर– वह लोकैषणा न करे।

विगिंच मंससोणियं– मांस और रक्त का विवेक कर।

जस्स नत्थि पुरा पच्छा मज्झे तस्स कओ सिया–

जिसका आदि-अन्त नहीं है, उसका मध्य कहां से होगा?

पांचवें अध्ययन का नाम है लोकसार। इसके कुछ सूक्त इस प्रकार हैं-

उट्ठिए णो पमायए– पुरुष उत्थित होकर प्रमाद न करे।

बंध पमोक्खो तुज्झ अज्झत्थेव– बन्धन-मोक्ष तुम्हारे अपने ही भीतर है।

वण्णाएसी णारभे कंचणं सव्वलोए– मुनि यश का इच्छुक होकर किसी भी क्षेत्र में कुछ भी न करे।

इस अध्ययन में वासना पीड़ित मनुष्य का अच्छा मार्गदर्शन किया गया है। उसे निर्बल आहार करना चाहिए, ऊनोदरी करनी चाहिए, ऊर्ध्वस्थान (कायोत्सर्ग) करना चाहिए आदि।

प्रस्तुत अध्ययन के अन्तिम अठारह सूत्रों में परमात्मा के स्वरूप का बहुत सुन्दर और संक्षिप्त चित्रण किया गया है।

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड
स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा 8905995002
पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

जुलाई 2025
सप्ताह के विशेष दिन

24 जुलाई
पक्खी

26 जुलाई
भगवान
सुमितनाथ च्यवन
कल्याणक

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री कालूरामजी युग

मुनिश्री हुलासमलजी (लाडनूं) दीक्षा क्रमांक 381

मुनिश्री विशिष्ट और उग्र तपस्वी थे। आपकी उत्कट तपस्या जन-जन को रोमांचित करने वाली है। आपने उपवास से सोलह दिन तक लड़ीबद्ध तप किया। ऊपर में 61 दिन का थोकड़ा किया। उनके तप की तालिका इस प्रकार है– उपवास/599, 2/68, 3/35, 4/20, 5/17, 6/15, 7/14, 8/12, 9/7, 10/2, 11/1, 12/1, 13/1, 14/1, 15/1, 16/1, 31/1, 37/1, 45/1, 61/1 कुल तप दिन 1624 जिनके 4 वर्ष 6 महिने 7 दिन होते हैं। यह तप आपने अपने 16 वर्ष के संयम पर्याय में सम्पन्न किये।

मुनिश्री ने लघु सिंह निष्क्रीडित तप की आराधना भी की। आपने पहली परिपाटी सं 1984, तीसरी परिपाटी सं 1985 तथा चौथी परिपाटी1985 में शुरू की। जिसमें 5 महीने और 5 दिन बीत चुके थे। 23 पारणे हो गए। पूर्ण होने में 32 दिन बाकी रहे तब मुनिश्री ने स्वर्ग-प्रस्थान कर दिया। इस प्रकार मुनिश्री ने तीन परिपाटियां करके बड़ा आदर्श उपस्थित किया।

– साभार : शासन समुद्र –

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

सम्पन्न व्यक्तित्व

लक्षण-सम्पन्नता महानता की सूचना होती है।

कोई व्यक्ति यदि आंतरिक रूप से महान होता है, तो उसकी महानता बाह्य रूप में भी प्रकट होती है।

बाहरी अभिव्यक्ति को देखकर भीतर की महानता को पहचानना सामान्यजन के लिए अपेक्षाकृत सरल हो जाता है।

आचार्य भिक्षु आंतरिक और बाह्य– दोनों प्रकार की महानताओं से सम्पन्न थे।

उनके शरीर पर महानता के सूचक अनेक शुभ लक्षण विद्यमान थे:

- दाएँ पैर में ऊर्ध्वरेखा अथवा पद्म रेखा
- दाएँ हाथ में मत्स्य रेखा
- हाथ की दसों अंगुलियों पर चक्र
- ग्रीवा (गर्दन) पर तीन लंबी रेखाएँ
- ललाट पर तीन लंबी रेखाएँ
- नाभि के पास स्वस्तिक का चिन्ह
- पेट पर ध्वजा का चिन्ह
- पेट पर तीन लंबी रेखाएँ
- दोनों कानों पर केश
- लाल नेत्र, गज जैसी गति
- प्रसन्नमुख मुद्रा एवं दीर्घ ललाट
- श्यामवर्ण, लम्बा और विशाल शरीर
- दाएँ हाथ की कलाई के समीप मणिबंध की तीन रेखाएँ

ज्योतिषियों ने भविष्यवाणी की:

“इन शुभ लक्षणों से यह स्पष्ट है कि यह पुरुष दो हजार वर्षों तक जनता के आकर्षण का केन्द्र बना रहेगा।”

भिक्षु की कहानी जयाचार्य की जुबानी

राग-द्वेष

राग-द्वेष की पहचान करने के लिए स्वामीजी ने दृष्टांत दिया। कोई बच्चे के सिर पर मारता है, तब लोग उसे उलाहना देते हैं- 'भले आदमी! बच्चे के सिर पर क्यों मारता है?' और किसी ने बच्चे के हाथ में लड्डू दिया, मूली दी, उसे कोई नहीं बरजता।' इस राग को पहचानना कठिन है और उस द्वेष को पहचानना सरल है। इसीलिए शास्त्रकार ने 'वीतराग' कहा, 'वीतद्वेष' नहीं। राग बाद में मिटता है और द्वेष पहले ही मिट जाता है।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

जानें तेरापंथ को पहचाने स्वयं को

श्रावक कौन ?

श्रमणों की समुपासना करने वाला श्रमणोपासक कहलाता है।

शास्त्रों का सजग श्रोता ‘श्रावक’ नाम से अलंकृत होता है।

भगवान महावीर की अनुपम देन है ‘अगार धर्म’। यह छोटी किन्तु रत्नों की माला के समान अनमोल है।

बारह व्रतों को जानने, समझने और उनका पालन करने वाला व्यक्ति ‘श्रावक’ कहलाता है। जिसमें अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, दिग्परिमाण, भोगोपभोग परिमाण, अनर्थदण्ड, सामायिक, देशावकाशिक, पौषधोपवास आदि व्रतों को यथाशक्ति अपनाने की स्वीकृति होती है, वही सच्चा श्रावक होता है।

श्रावक ‘अम्मा पिउ समाणा’ होता है– माता-पिता के समान आदरणीय, सहायक और सेवा भाव से युक्त। श्रावक अनेक विशिष्ट गुणों से युक्त होता है।

आचार्यश्री तुलसी के शब्दों में– “जो शास्त्रों का सजग श्रोता होता है, वह श्रावक होता है।”

गुरुदेवश्री तुलसी ने लिखा भी है– “श्रावक व्रत धारो, निज जीवन धन संभारो रे।”

आइए ! हम इस रत्नमय माला को धारण करने का प्रयास करें, उसे अपने जीवन का लक्ष्य बनाएं।

यदि पूर्ण माला धारण कर पाना संभव न हो तो छोटी माला अवश्य स्वीकारें– उसे अपनाएं और अपने जीवन को सार्थक व धन्य बनाएं।

क्या आप जानते हैं?

बिना उबाले हुए स्ट्रॉबेरी के बीज व फल को सचित्त माना गया है, भले उनके टुकड़े कर दिए जाएं व बीज पीसकर दूध आदि में मिला दिए जाएं।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर देश के कोने-कोने में हुए विविध आयोजन

हैदराबाद

प्रेक्षा फाउंडेशन के तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर प्रेक्षावाहिनी हैदराबाद द्वारा तुलसी महाप्रज्ञ भवन, IDPL में योग कार्यशाला का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। ममता दुगड़ ने प्रेक्षावाहिनी की गतिविधियों की जानकारी दी। राष्ट्रीय योग दिवस के प्रथम चरण में पार्श्व व पुष्पचूला सामायिक जोन में विविध कार्यक्रम संपन्न हुए। अहमदाबाद विमान हादसे में दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित की गई तथा सामूहिक लोगस्स पाठ एवं ध्यान किया गया। 'सामूहिक कर्मों से बचाव' विषय पर संवाद हुआ। पच्चीस बोल पर तत्वचर्चा के साथ-साथ आग पर कर्म बंध के संदर्भ में जानकारी दी गई। कई बहनों ने विभिन्न प्रकार के त्याग प्रत्याख्यान स्वीकार किए। कार्यक्रम के द्वितीय चरण में प्रेक्षा साउथ कोऑर्डिनेटर रीता सुराणा ने प्रेक्षा ध्यान, योगासन, प्राणायाम एवं सूर्य-चंद्र स्वर की उपयोगिता समझाई एवं प्रयोग कराए। अर्हम ध्यान का अभ्यास करवाया गया। अंजना भादानी ने आभार ज्ञापित किया।

सैंथिया

तेरापंथ युवक परिषद द्वारा ऋषभ भवन में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। योगाचार्य बवन पांडे ने उपस्थित प्रतिभागियों को योग के विभिन्न आयामों से अवगत कराया। इस शिविर में सभी उम्र के लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, जो योग के प्रति बढ़ती जागरूकता और उसके सार्वभौमिक महत्व को दर्शाता है। योगाचार्य बवन पांडे के निर्देशन में, प्रतिभागियों ने न केवल शारीरिक आसनों का अभ्यास किया बल्कि योग के मानसिक और आध्यात्मिक लाभों को भी समझा।

बेंगलुरु

तेरापंथ युवक परिषद बेंगलुरु द्वारा अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर 'योगा से होगा 2.0' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम 'फिट युवा – हिट युवा' मुहिम के अंतर्गत युवाओं को स्वस्थ जीवनशैली और मानसिक संतुलन के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से आयोजित किया गया।

इस अवसर पर प्रेक्षा इंटरनेशनल ट्रेनर रेणु कोठारी ने योगाभ्यास का प्रशिक्षण दिया। उन्होंने प्रेक्षा ध्यान, श्वास-प्रश्वास तकनीक और योगासनों के माध्यम से शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शुद्धि के महत्व को सरल और प्रभावशाली ढंग से समझाया। कार्यक्रम में तेरापंथ युवक परिषद बेंगलुरु के अध्यक्ष विमल धारीवाल ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि योग का नियमित अभ्यास जीवन को सशक्त बनाता है और आज योग दिवस के शुभ अवसर पर इसकी शुरुआत करना हम सबके लिए प्रेरणादायी है। इस आयोजन में परिषद के अनेक पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षिका रेणु कोठारी का सम्मान भी किया गया। इस आयोजन को सफल बनाने में संयोजक प्रदीप चोपड़ा का विशेष योगदान सराहनीय रहा।

चेन्नई

तेरापंथ जैन विद्यालय, पट्टालम के प्रांगण में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रभु-वंदना के साथ किया गया, जिसके पश्चात योगासन सत्र का संचालन विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा किया गया। इस अवसर पर छात्रों ने हिंदी, अंग्रेजी और तमिल—तीनों भाषाओं में योग के महत्व को रेखांकित करते हुए अपने विचार साझा किए। प्रशिक्षकों ने योग को आत्मा का पोषण करने वाला साधन बताते हुए कहा कि योग के माध्यम से बड़ी से बड़ी बीमारियों का समाधान संभव है। प्रत्येक व्यक्ति को दिन में कम से कम आधा घंटा योग के लिए अवश्य निकालना चाहिए, क्योंकि यह न केवल शारीरिक विकास करता है, बल्कि मस्तिष्क के सुचारू संचालन में भी सहायक होता है। विद्यालय के छात्रों ने बड़ी तन्मयता से विभिन्न योगाभ्यासों का प्रदर्शन किया, जिससे पूरे वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का संचार हुआ। कार्यक्रम के अवसर पर विद्यालय प्रबंधन समिति से महासंवाददाता संजय भंसाली, स्कूल कमेटी कन्वीनर प्रमोद गादिया एवं प्रधानाचार्या आशा क्रिस्टी की गरिमामयी उपस्थिति रही।

गंगाशहर

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के 'फिट युवा – हिट युवा' आयाम के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के वसर पर तेरापंथ युवक परिषद गंगाशहर द्वारा 'योगा से होगा 2.0' का भव्य आयोजन दो स्थानों—बोथरा भवन एवं महिला मंडल भवन में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। बोथरा भवन में यह आयोजन युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के आज्ञानुवर्ती उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी एवं मुनि श्रेयांश कुमार जी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। कार्यक्रम में मुनि कमल कुमार जी ने योग के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि 'स्वस्थ शरीर ही जीवन की सच्ची संपत्ति है। योग को जीवन का आधार बनाकर ही हम तन-मन को संतुलित करते हुए सफल जीवन की दिशा में अग्रसर हो सकते हैं।' योग प्रशिक्षक जेठाराम द्वारा विभिन्न प्रभावशाली योग अभ्यास करवाए गए, जिनमें बड़ी संख्या में श्रावकगण, तेयुप व किशोर मंडल के कार्यकर्ता एवं संघीय संस्थाओं के पदाधिकारी-सदस्यगण उपस्थित रहे। महिला मंडल भवन में सुधा चौधरी, सुधा बोथरा एवं सीमा बोथरा ने महिलाओं व कन्याओं को सरल और प्रभावशाली योगाभ्यास करवाए। फिट युवा – हिट युवा गंगाशहर प्रभारी गौतम चौपड़ा ने जानकारी दी कि कार्यक्रम में समाजजन ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सहप्रभारी धीरज जैन ने आग्रह किया कि योग को केवल एक दिवस का आयोजन न मानकर इसे प्रतिदिन के जीवन का अंग बनाया जाए।

तेयुप मंत्री मांगीलाल बोथरा ने बताया कि दोनों स्थानों पर योग शिविरों का सफल आयोजन सभी के सामूहिक सहयोग से संभव हो सका। संगठन मंत्री रोहित बैद ने आयोजन की व्यवस्थाओं में किशोर मंडल संयोजक हिमांशु सिंघी, सहसंयोजक मयंक सिंघी एवं संपूर्ण किशोर मंडल के विशेष श्रम की सराहना की। कार्यक्रम के समापन पर अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के 'फिट युवा – हिट युवा' थली राजस्थान के राज्य प्रभारी एवं तेयुप गंगाशहर अध्यक्ष ललित राखेचा ने प्रशिक्षकों, सहभागियों, साधु-साध्वियों एवं सभी सहयोगियों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त किया। अंत में, बोथरा भवन में मुनि श्रेयांश कुमार जी एवं महिला मंडल भवन में साध्वी विशदप्रज्ञा जी के मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम का विधिवत समापन हुआ।

उत्तर कोलकाता

अभातेयुप के निर्देशानुसार उत्तर कोलकाता तेरापंथ युवक परिषद द्वारा विनायक एनक्लेव में मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री ने योग के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति में योग की प्राचीन परंपरा रही है। ऋषि-मुनियों ने योग साधना के माध्यम से अनेक लब्धियाँ और शक्तियाँ प्राप्त की हैं। योग न केवल एक साधना है, बल्कि यह एक पूर्ण विज्ञान है और जीवन जीने की एक श्रेष्ठ कला भी है, जिसका उद्देश्य है—स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का निर्माण। उन्होंने कहा कि नियमित योगाभ्यास से चैतन्य केंद्रों को जागृत किया जा सकता है। योग से ऊर्जा का विकास होता है, स्मरण शक्ति एवं सकारात्मक चिंतन बढ़ता है और तन-मन हल्का बना रहता है। जैसे शरीर के लिए भोजन आवश्यक है, वैसे ही आत्मा के लिए यम, नियम, आसन, प्राणायाम, ध्यान, धारणा और समाधि की आवश्यकता होती है। मुनि श्री ने बताया कि योग का एक अर्थ 'जोड़ना', दूसरा 'प्रवृत्ति' और तीसरा 'समाधि' होता है। योग के साथ ध्यान भी अनिवार्य है। प्रेक्षाध्यान के माध्यम से शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य प्राप्त किया जा सकता है। इस दौरान उन्होंने प्रेक्षा ध्यान के कुछ प्रयोग भी करवाए। योगाभ्यास सत्र का संचालन मनीषा नाहटा, श्वेता भंसाली और सुनीता दोषी ने किया। कार्यक्रम का स्वागत भाषण तेयुप अध्यक्ष प्रदीप हीरावत ने दिया तथा आभार ज्ञापन मंत्री आदित्य संचेती ने किया। इस अवसर पर तेरापंथ सभा अध्यक्ष विनोद बैद और महिला मंडल अध्यक्ष मंतोष बैद ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

सूरतगढ़

श्री बिश्नोई मंदिर प्रांगण में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत अनिशा नवलखा द्वारा प्रेक्षा गीत की मधुर प्रस्तुति से हुई। बलराम पारिक ने अणुव्रत के नियमों की जानकारी देते हुए श्वास लेने की सही तकनीक, उचित बैठने तथा सोने की विधियों को सरलता से समझाया। समिति अध्यक्ष लाजपत राय भाटिया ने प्रेक्षा ध्यान शिविर के अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि योग और ध्यान के माध्यम से तन, मन और भावनाओं को संतुलित रखा जा सकता है। उन्होंने मोबाइल के सीमित उपयोग को भी मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक बताया। अनिल रांका ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व योग दिवस को मनाए जाने के आज 11 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और यह भारतवर्ष की अद्वितीय देन है। उन्होंने सभी उपस्थितजनों को दीर्घ श्वास प्रेक्षा का अभ्यास एवं 'ॐ' ध्वनि का प्रयोग करवाया। संचालन रामेश्वर दयाल तिवाड़ी द्वारा किया गया।

भीलवाड़ा

फिट युवा – हिट युवा के अंतर्गत 'योगा से होगा' कार्यक्रम का आयोजन जयाचार्य भवन, भीलवाड़ा में साध्वी उर्मिलाकुमारी जी के सान्निध्य में संपन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री के मंगल मंत्रोच्चार से हुई, तत्पश्चात मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। योग प्रशिक्षिका अनीता हिरण ने सभी उपस्थित गणमान्यजनों को सरल और प्रभावी योगाभ्यास करवाया तथा योग के महत्व पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। इस आयोजन में तेरापंथ युवक परिषद भीलवाड़ा के अध्यक्ष अमित मेडतवाल, भिक्षु सेवा संस्थान के मंत्री दिलीप रांका, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के सदस्य कुलदीप मारू सहित अनेक गणमान्य सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में सभी अतिथियों एवं सहभागियों के प्रति आभार ज्ञापन तेरापंथ युवक परिषद भीलवाड़ा के अध्यक्ष अमित मेडतवाल द्वारा किया गया।

कटक

अभातेयुप के निर्देशन में फिट युवा हिट युवा अभियान के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद, कटक द्वारा अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योग कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ भवन, कटक में समणी निर्देशिका डॉ. निर्वाणप्रज्ञा जी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष मुकेश सेठिया ने कहा कि हमें अपने शरीर को स्वस्थ एवं सक्रिय बनाए रखने के लिए नियमित रूप से योगाभ्यास करना चाहिए। योग प्रशिक्षक अरुण गुप्ता ने उपस्थित संभागियों को विभिन्न योगासनों का अभ्यास करवाया। समणी मध्यस्थप्रज्ञा जी ने सभी को ध्यान कराया और बताया कि नियमित योग एवं ध्यान के अभ्यास से न केवल शारीरिक बीमारियों को जड़ से समाप्त किया जा सकता है, बल्कि मानसिक तनाव को भी दूर कर जीवन में ऊर्जा और संतुलन प्राप्त किया जा सकता है। इस कार्यक्रम को सफलतापूर्वक संपन्न कराने में परिषद के मंत्री चिराग सिंघी और फिट युवा हिट युवा कटक के संयोजक गौरव खटेड़ का विशेष परिश्रम रहा। कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, महिला मंडल तथा तेरापंथ युवक परिषद के सदस्यों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर देश के कोने-कोने में हुए विविध आयोजन

गोरेगांव, मुंबई

अणुव्रत समिति मुंबई (क्षेत्र गोरेगांव) एवं तेरापंथ युवक परिषद गोरेगांव द्वारा अंतरराष्ट्रीय योग दिवस, नशा मुक्ति अभियान एवं 'फिट युवा – हिट युवा' कार्यक्रम का सफल आयोजन दो अलग-अलग स्थानों पर किया गया। प्रज्ञा बोधिनी हाई स्कूल में आयोजित कार्यक्रम का आयोजन मुख्यतः विद्यालयीन विद्यार्थियों के लिए किया गया, जिसमें कक्षा 10वीं के लगभग 80 विद्यार्थियों ने भाग लिया। मुख्य प्रशिक्षिकाएं बबिता बैद एवं सायरा बेद रहीं। उन्होंने अत्यंत सरल और प्रभावी ढंग से विद्यार्थियों को प्रायोगिक गतिविधियाँ करवाईं। आंख, कान, गर्दन की क्रियाएं, ध्यान, मंत्रों एवं ध्वनि तरंगों के माध्यम से विद्यार्थियों को तनावमुक्त जीवन जीने, परीक्षा संबंधी मानसिक दबाव को दूर करने एवं स्मरण शक्ति बढ़ाने के सरल उपाय बताए गए। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति गोरेगांव की संयोजिका डिंपल हिरण ने किया। सभा अध्यक्ष अशोक चौधरी ने बच्चों को सकारात्मक आचरण अपनाने व समाज हित में सक्रिय रहने की प्रेरणा दी। तेयुप अध्यक्ष सुमित चोरड़िया ने योग को जीवन का अनिवार्य हिस्सा बनाने का आह्वान किया। आयोजन के प्रायोजक के रूप में सुनील हिरण परिवार का विशेष सहयोग रहा। दूसरा कार्यक्रम तेरापंथ भवन में हुआ, जिसका शुभारंभ तेयुप अध्यक्ष सुमित चोरड़िया के स्वागत भाषण से हुआ। मुख्य प्रशिक्षक उपासक सुरेश ओस्तवाल एवं सहयोगी अशोक चौधरी ने उपस्थितजनों को योग, ध्यान एवं महाप्राण ध्वनि के प्रयोग करवाए। उन्होंने बताया कि योगिक क्रियाओं द्वारा तनाव और बीमारियों से मुक्ति पाकर हम शारीरिक और मानसिक रूप से ऊर्जावान रह सकते हैं। कार्यक्रम में उपस्थितजनों की जिज्ञासाओं का समाधान भी प्रशिक्षकों द्वारा किया गया। इस आयोजन में तेरापंथ सभा, तेरापंथ युवक परिषद, महिला मंडल, अणुव्रत समिति के अनेक सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का कुशल संचालन एवं आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री हितेश राठौड़ द्वारा किया गया।

साउथ हावड़ा

योग केवल व्यायाम नहीं, यह जीवन जीने की एक कला है। इसी भावना को आत्मसात करते हुए अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में 'फिट युवा – हिट युवा' अभियान के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद साउथ हावड़ा द्वारा अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योग शिविर का आयोजन क्षेत्र के वन शॉट टर्फ मैदान में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ हुआ। तत्पश्चात परिषद अध्यक्ष आदेश चौरड़िया ने सभी उपस्थितजनों का स्वागत करते हुए कहा कि 'योग न केवल शरीर का अनुशासन है, बल्कि यह मन का नियंत्रण और आत्मा का स्पंदन है।' सभा उपाध्यक्ष मदन चंद नाहटा तथा अणुव्रत समिति के उपाध्यक्ष मनीष कुमार बैद एवं संजय पारख ने भी अपने विचार व्यक्त किए। योग सत्र का संचालन जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय से योग शिक्षा में उपाधि प्राप्त देबिका पोरेल एवं सायंती सरकार द्वारा किया गया। उन्होंने प्रतिभागियों को सरल एवं प्रभावी ढंग से सूर्य नमस्कार, विभिन्न योगासन, प्राणायाम एवं ध्यान का अभ्यास करवाया। कार्यक्रम में 100 से अधिक प्रतिभागियों की सक्रिय सहभागिता रही।

कार्यक्रम की सफलता में श्रीयांश एवं रियांश भंसाली परिवार का योगदान प्रायोजक के रूप में रहा। कार्यक्रम का संचालन अमित बेगवानी ने किया तथा सभी उपस्थितजनों के प्रति आभार प्रवीण बैंगानी ने व्यक्त किया। आयोजन की सफलता में अभिषेक खटेड़, करण गोलछा और मिथलेश बैद का विशेष श्रम एवं समर्पण उल्लेखनीय रहा।

चेन्नई

तेरापंथ महिला मण्डल, किलपॉक द्वारा इको पार्क, चेतपेट में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया। नमस्कार महामन्त्र के पश्चात महाप्राण ध्वनि से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। छवि सुराणा ने यौगिक क्रियाएं, प्रेक्षा प्रशिक्षिका भारती मुथा एवं साधना परमार ने ध्यान, योगासन के प्रयोग करवाए। किलपॉक पुलिस उप आयुक्त झरीना बेगम, अन्य तीन क्षेत्रों के उप आयुक्त तथा अनेकों गणमान्य व्यक्ति कार्यक्रम में सहभागी बने। उन्होंने योगाभ्यास कार्यक्रम के सुन्दर संचालन की सराहना की और आग्रह किया कि नियमित यह कार्यक्रम कराएं तो और भी जनोपयोगी रहेगा। किलपॉक महिला मण्डल अध्यक्षा अनिता सुराणा ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किया। महिला मण्डल राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्या माला कातरेला ने तमिल भाषा में प्रस्तुति दी। इस अवसर पर किलपाक तेरापंथ सभाध्यक्ष अशोक परमार एवं पदाधिकारीगण, महिला मण्डल पदाधिकारी गण, सदस्य एवं अच्छी संख्या में लोगों की उपस्थिति रही। चारों पुलिस उप आयुक्त का महिला मण्डल द्वारा अभिनन्दन किया गया। मंत्री वनिता नाहर ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

अमराईवाड़ी ओढ़व

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेयुप अमराईवाड़ी-ओढ़व द्वारा हिट युवा फिट युवा अभियान के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय योगा दिवस पर तीन योग शिविरों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मंत्री हेमंत पगारिया द्वारा नवकार महामंत्र के जाप से हुई। स्वागत भाषण तेयुप अध्यक्ष अशोक पगारिया ने दिया और योग से होने वाले लाभ के बारे में भी जानकारी दी। योग शिविर क्रमशः (1) ATDC के बाहर, (2) वस्त्राल स्थित जडेश्वर गार्डन में तथा (3) Happy Tots Pre School में आयोजित किए गए। इन शिविरों में तेरापंथ सभा, युवक परिषद, महिला मंडल, किशोर मंडल, जैन समाज एवं पटेल समाज के सदस्यों की सक्रिय भागीदारी रही। योग कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रशिक्षक डॉ. हेत्वी पटेल, मीनल कदमालिया, डॉ. धर्मेंद्र पटेल और संध्या जैन ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने दैनिक जीवन में योग के महत्व और उसके लाभों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। तत्पश्चात सभी प्रशिक्षकों ने उपस्थित सदस्यों को योगासन एवं व्यायाम का अभ्यास करवाया। कार्यक्रम के संयोजन में जिनेश बाफना, दिलीप टोडरवाल, पिंटू दुगड़ और मयंक गेलड़ा ने अपनी कार्यक्षमता का परिचय देते हुए अच्छी उपस्थिति दर्ज कराई। शिविर में लगभग 80 सदस्यों ने भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाया। कार्यक्रम के अंत में मंत्री हेमंत पगारिया ने सभी उपस्थितजनों के प्रति आभार व्यक्त किया।

विजयनगर

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में फिट युवा हिट युवा अभियान के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में 'योगा से होगा 2.0' कार्यक्रम का आयोजन अर्हम् भवन में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुई। तेयुप विजयनगर अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा ने अतिथियों का स्वागत किया। अभातेयुप के राष्ट्रीय 'फिट युवा हिट युवा' दक्षिण प्रभारी राकेश पोखरणा ने अपने संबोधन में कहा कि हमें शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की उन्नति हेतु नियमित योगाभ्यास को अपने जीवन में अपनाना चाहिए। 'योगा से होगा' कार्यक्रम के अंतर्गत इंटरनेशनल योगा ट्रेनर शिवराज एवं मानसा ने सभी प्रतिभागियों को सहज रूप में योग एवं जुम्बा का अभ्यास करवाया। इस अवसर पर तेरापंथ सभा विजयनगर अध्यक्ष मंगल कोचर, तेयुप परिवार, महिला मंडल अध्यक्षा मंजू गादिया ने कार्यक्रम के प्रति शुभकामनाएं प्रेषित कीं। कार्यक्रम में अर्हम् मित्र मंडल के मंत्री विनोद पारख, तेयुप प्रबंध मंडल, पूर्व अध्यक्ष सहित कार्यकारिणी सदस्य एवं अनेक संभागियों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन मंत्री संजय भटेवरा ने किया।

जोधपुर

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशानुसार YOGA SE HOGA 2.0 अभियान के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद सरदारपुरा द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सभा, महिला मंडल और परिषद तीनों संगठनों ने एकजुट होकर इस आयोजन में भाग लिया। योग सत्र का संचालन योग प्रशिक्षिका विनीता सेठिया के मार्गदर्शन में हुआ। कुल 20 प्रतिभागियों ने इस सत्र में भाग लेकर योग का अभ्यास किया और शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य के प्रति अपनी जागरूकता दिखाई।

मुंबई

चौगुले हाई स्कूल, बोरीवली के प्रांगण में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में जीवन विज्ञान पर आधारित विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन जीवन विज्ञान की मुख्य प्रशिक्षिका उषा कच्छारा एवं हेमलता जैन सोनी ने किया। उनके साथ सहयोगी के रूप में विमला पटेल एवं शांता वोरा भी उपस्थित रहीं। सर्वप्रथम स्कूल की प्रिंसिपल प्रतीक्षा वनमाली ने सभी प्रशिक्षकों का स्वागत किया। तत्पश्चात कक्षा पाँचवीं से आठवीं तक के लगभग ढाई सौ विद्यार्थियों को उषा कच्छारा द्वारा जीवन विज्ञान की संक्षिप्त एवं प्रभावशाली जानकारी दी गई। कार्यक्रम में महाप्राण ध्वनि, गर्दन की योगिक क्रियाएं, कायोत्सर्ग, दीर्घ श्वास, प्रेक्षाज्ञान आदि का अभ्यास करवाया गया, जिसे हेमलता सोनी और विमला पटेल ने प्रायोगिक रूप में सम्पन्न करवाया।

शांता वोरा ने विद्यार्थियों को नैतिक संकल्प दिलवाया। साथ ही, हेमलता सोनी ने नशे से होने वाले दुष्परिणामों के बारे में जानकारी देते हुए सभी को नशा मुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी और उसी भावना के साथ विद्यार्थियों एवं शिक्षकों से संकल्प भी करवाया। पूरे कार्यक्रम में पीटी शिक्षक डीडी पंवार का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम की सफलता को हुए स्कूल प्रिंसिपल प्रतीक्षा वनमाली ने भविष्य में भी ऐसे आयोजन विद्यालय में करवाने के लिए पुनः आमंत्रण दिया।

हैदराबाद

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ महिला मंडल, हैदराबाद द्वारा तेरापंथ युवक परिषद के संयुक्त तत्वावधान में तेरापंथ भवन, डी.वी. कॉलोनी में भव्य योग दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में संपन्न हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत संयोजिका प्रभा दूगड़ द्वारा पंच परमेष्ठी को नमन करते हुए की गई। तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा ने सभी उपस्थितजनों का स्वागत करते हुए साध्वीवृंद के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। कार्यक्रम का मंगलाचरण साध्वी मेरुप्रभा जी एवं साध्वी दक्षप्रभा जी द्वारा अर्हम् धुन के साथ किया गया।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने पाँच केंद्रों पर ध्यान कराते हुए उदाहरण सहित समझाया कि हमारे शरीर में विद्यमान पाँचों तत्वों को संतुलन में रखते हुए योग और प्राणायाम के माध्यम से हम स्वयं को निरोग रख सकते हैं। साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी ने अपने संबोधन में तन और मन को स्वस्थ बनाए रखने हेतु उपयोगी और सरल सुझाव दिए। उन्होंने बताया कि बीपी, शुगर, थायरॉइड जैसी आम बीमारियों से बचने के लिए छोटे-छोटे उपाय अपनाकर नियमित अभ्यास से अनेक व्याधियों से छुटकारा पाया जा सकता है। इस अवसर पर महिला मंडल की नवनिर्वाचित अध्यक्षा नमिता सिंघी एवं निवर्तमान मंत्री सुशीला मोदी भी उपस्थित रहीं।

योग दिवस के इस विशेष कार्यक्रम में प्रभावती ज़ोन, दमयंती ज़ोन एवं दीपानंदन ज़ोन ने सक्रिय सहभागिता दर्ज कराई। अंत में, मंत्री अनिल दूगड़ ने साध्वीवृंद के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए सभी सहयोगियों एवं सहभागीजन का आभार प्रकट किया।

नूतन एक्स-रे मशीन का शुभारंभ

विजयनगर।

अभातेयुप के तत्वावधान में तेयुप विजयनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, मागड़ी रोड में नवीन एक्स-रे मशीन का शुभारंभ साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य एवं अभातेयुप अध्यक्ष रमेश डागा की अध्यक्षता में जैन संस्कार विधि के साथ सम्पन्न हुआ।

साध्वी संयमलता जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि सामाजिक सेवा के क्षेत्र में आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एक सराहनीय आयाम है और विजयनगर में इसकी स्थापना विशेष रूप से उल्लेखनीय है। साध्वी मार्दवश्री जी ने सभी के उत्तम स्वास्थ्य की मंगलकामना करते हुए युवाओं से संघ सेवा के प्रति और अधिक जागरूकता का आह्वान किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने विजयनगर द्वारा रिकॉर्ड सातवीं एटीडीसी स्थापना के उपरांत अब बड़े और स्थाई प्रकल्पों जैसे अस्पताल निर्माण की दिशा में कदम बढ़ाने का सुझाव दिया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि विमल कटारिया, अभातेयुप उपाध्यक्ष प्रथम पवन मांडोत, महामंत्री अमित नाहटा, एटीडीसी प्रभारी राकेश पोखरणा, विजयनगर प्रभारी रोहित कोठारी और श्रेयांस गोलछा ने भी शुभकामनाएं प्रेषित कीं।

इस अवसर पर उद्घाटनकर्ता मनोहरलाल बाबेल परिवार के राकेश, मुकेश, दर्शन व चिरायु बाबेल का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में अभातेयुप परिवार, सभा पदाधिकारी, पूर्व अध्यक्षगण, संस्कारक विकास बांठिया, विनय पितलिया, प्रबंध मंडल सदस्य सहित कार्यसमिति व परिषद परिवार की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन विकास बांठिया ने किया तथा आभार संजय भटेवरा ने व्यक्त किया।

दायित्व बोध ग्रहण समारोह

राजराजेश्वरी नगर।

तेरापंथ युवक परिषद् राजराजेश्वरी नगर का शपथ-ग्रहण तथा दायित्व-हस्तांतरण समारोह मेहंदीपुर बालाजी मंदिर परिसर, राजराजेश्वरी नगर में जैन संस्कारक दिनेश मरोठी ने साध्वी पुण्ययशा जी के सान्निध्य में संपन्न कराया।

साध्वीश्री ने नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ किया, तुलसी संगीत सुधा के सदस्यों ने विजय गीत प्रस्तुत किया। इसके बाद दिनेश मरोठी ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। निवर्तमान अध्यक्ष बिकाश छाजेड़ ने नव-मनोनीत अध्यक्ष विक्रम महेर को पद व गोपनीयता की शपथ दिलाकर नई कार्यकारिणी को शुभकामनाएँ दीं।

विक्रम महेर ने अपनी टीम की घोषणा की—उपाध्यक्ष प्रथम विपुल पितलिया, उपाध्यक्ष द्वितीय प्रवीण बैद, मंत्री संदीप बैद, सह-मंत्री प्रथम महेश मांडोत, सह-मंत्री द्वितीय विपिन पितलिया, कोषाध्यक्ष विनीत सेठिया और संगठन मंत्री सौरभ दुगड़—सहित सलाहकारों व कार्य-समिति सदस्यों को शपथ दिलाई। उन्होंने सभी कार्यकर्ताओं से एकजुट होकर अभातेयुप निर्देशित योजनाओं के साथ नए आयाम स्थापित करने का आह्वान किया।

साध्वीश्री ने नए पदाधिकारियों को संकल्पों पर अमल करते हुए संघहित में कार्य करने की प्रेरणा दी। अभातेयुप से दिनेश मरोठी, शाखा प्रभारी विशाल पितलिया, आरआर नगर सभा अध्यक्ष राकेश छाजेड़, ट्रस्ट अध्यक्ष मनोज डागा और महिला मंडल अध्यक्षा मंजू बोथरा ने भी नई टीम को बधाई दी। समारोह में अभातेयुप परिवार, तेयुप आरआर नगर के पूर्व अध्यक्ष, सभा, ट्रस्ट ,महिला मंडल, ज्ञानशाला व अन्य संघीय संस्थाओं के पदाधिकारी तथा श्रावक समाज उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन पूर्व अध्यक्ष गुलाब बांठिया ने किया तथा आभार परिषद मंत्री संदीप बैद ने व्यक्त किया।

निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन

जयपुर। राजस्थान पत्रिका एवं श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय योग शिविर के अवसर पर आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर द्वारा निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन अणुविभा केन्द्र, मालवीय नगर, जयपुर में किया गया। न्यास के चेयरमैन रवि छाजेड़ ने बताया कि शिविर में ब्लड प्रेशर, पल्स रेट, शुगर व वज़न की जांच पूर्णतः निःशुल्क की गई। शिविर में 55 जनों ने स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ लिया। कार्यक्रम की कुशल संयोजना में श्रेयांस बैंगानी का श्रम उल्लेखनीय रहा।

नशामुक्ति निरोधक दिवस कार्यक्रम आयोजित

इचलकरंजी।

अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के निर्देशन में, 'नशामुक्ति निरोधक दिवस' के रूप में अणुव्रत समिति इचलकरंजी द्वारा गोविंदराव स्कूल एंड कॉलेज में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। नशामुक्ति पर अणुव्रत समिति की ओर से स्पीकर के रूप में पधारे दिनेश छाजेड़ (राष्ट्रीय संयोजक, नशामुक्ति अभियान) ने सभी विद्यार्थियों को समझाया कि यदि आप नशा करते हैं तो इससे न केवल आपका शारीरिक नुकसान होता है, बल्कि आपके परिवार को भी कष्ट और हानि होती है। नशा व्यक्ति के भविष्य को अंधकार की ओर ले जाता है। उन्होंने कहा कि समाज के हर व्यक्ति को नशामुक्त जीवन जीने का संकल्प लेना चाहिए।

प्राध्यापक एवं शिक्षकगण ने अणुव्रत समिति के इस प्रयास की सराहना की। कार्यक्रम में पूर्व अध्यक्ष विकास सुराणा ने जीवन विज्ञान एवं डिजिटल डिटॉक्स के विषय में विद्यार्थियों को जानकारी दी। इस अवसर पर समिति के सचिव संतोष भंसाली, सह सचिव डिंपल भंसाली, कार्यकारिणी सदस्य अंकुश बाफना सहित अन्य सदस्यगण भी उपस्थित थे।

मंत्र प्रेक्षा कार्यशाला का आयोजन

चेंबूर, मुम्बई।

अभातेमम के निर्देशानुसार, तेरापंथ महिला मंडल चेंबूर द्वारा 'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में 'प्रेक्षा प्रवाहः शांति एवं शक्ति की ओर' विषय पर 'अर्हं मंत्र प्रेक्षा कार्यशाला' का सुंदर आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से की गई। इसके पश्चात महिला मंडल की बहनों ने प्रेक्षा ध्यान गीत प्रस्तुत किया। महिला मंडल अध्यक्षा मनीषा कोठारी ने स्वागत वक्तव्य देकर सभी का हार्दिक स्वागत किया। साध्वीश्री ने अपने वक्तव्य में बताया कि अर्हं मंत्र आत्मा को जाग्रत करने वाला मंत्र है। प्रेक्षाध्यान हमें अपने भीतर झांकने की कला सिखाता है, और जब मंत्र और ध्यान का संगम होता है, तो शक्ति शांति में परिवर्तित हो जाती है। 'णमो अरिहंताणं' केवल ध्वनि नहीं, बल्कि चेतना को जाग्रत करने का मार्ग है। प्रेक्षा प्रवाह उसी शक्ति को शांति में बदलने की साधना है। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मंजूरेखा जी ने कुशलतापूर्वक किया। साध्वी उदितप्रभा जी ने कायोत्सर्ग का अभ्यास करवाया। प्रेक्षा प्रशिक्षिका मीना साबद्रा ने अर्हं मंत्र प्रेक्षा की विस्तृत जानकारी दी और बताया कि यह साधना आत्मा की शुद्धि एवं आंतरिक जागरण का सशक्त माध्यम है।

प्रेक्षा प्रशिक्षिका ऊषा कच्छारा द्वारा 'अर्हम' की दिव्य ध्वनि का प्रयोग करवाया गया। कार्यक्रम का आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष विशाखा बापना ने किया। इस अवसर पर मंत्री बेला डांगी और महिला मंडल की बहनों की सक्रिय एवं सराहनीय उपस्थिति रही।

शपथ ग्रहण समारोह

तिरुप्पुर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद की शाखा तिरुप्पुर के सत्र 2025-2026 के कार्यकाल के नव निर्वाचित अध्यक्ष एवं उनकी कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह जैन संस्कार विधि से आयोजित हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ जैन संस्कारकों जितेंद्र भंसाली, राहुल बरड़ियाa एवं प्रेम डाकलिया द्वारा नमस्कार महामंत्र से किया गया तत्पश्चात निवर्तमान अध्यक्ष मोहित शामसुखा ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्रेयांश नाहर को शपथ ग्रहण करवाया। श्रेयांश नाहर ने अपनी कार्यकारिणी की घोषणा की एवं उपस्थित सदस्यों को शपथ ग्रहण करवाया।

इसी के साथ 2024 - 2025 कार्यकारिणी द्वारा दायित्व हस्तांतरण भी किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित सभा अध्यक्ष अनिल आंचलिया एवं महिला मंडल अध्यक्षा नीतू सिंघवी ने भी नवगठित कार्यकारिणी को शुभकामनाएं दी।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र **'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'** में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. **8905995002 पर व्हाट्सअप** अथवा **abtyptt@gmail.com** पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए
नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।
https://terapanthtimes.org/

:: निवेदक ::

सेवा संस्कार संगठन

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

सुखी परिवार का मंत्र है सामंजस्य

उत्तर कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तथा तेरापंथ युवक परिषद उत्तर कोलकाता के तत्वावधान में विनायक परिसर में व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला का विषय था – 'कैसे रहें सुखी घर-परिवार', जिसमें बड़ी संख्या में भाई-बहनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने संबोधित करते हुए कहा, 'मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज की सबसे छोटी तथा महत्वपूर्ण इकाई परिवार है। परिवार एक बगीचे की तरह होता है, एक गुरुकुल की भांति शिक्षादायक और एक सामूहिक चेतना का प्रतीक होता है।'

उन्होंने बताया कि परिवार में सुखपूर्वक रहने के अनेक सूत्र हैं, जिनमें सबसे प्रमुख है – सामञ्जस्य, जिसका अर्थ है आपसी खींचतान न होना और आग्रहों का त्याग करना।

मुनिश्री ने कहा कि सेवा, सहयोग और सहिष्णुता के भाव से पारिवारिक दूरी समाप्त होती है और आत्मीयता का विकास होता है। उन्होंने सेवा को निःस्वार्थ भाव से करने की प्रेरणा देते हुए कहा कि सेवा-संस्कृति ही दीर्घजीवी और तेजस्वी बनती है। मुनिश्री ने परिवार के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि परिवार मानवीय गुणों का केंद्र होता है और इसकी शांति एवं सुख के लिए विचारों का आदान-प्रदान, ध्यान, जप आदि अत्यंत उपयोगी साधन हैं।

कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया और मुनि कुणाल कुमार जी ने भावपूर्ण गीत की प्रस्तुति दी। तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष प्रदीप हीरावत ने स्वागत भाषण दिया एवं मंत्री आदित्य संचेती ने आभार ज्ञापन किया।

दो धाराओं के मधुर मिलन से गूंजा जैन एकता का स्वर

गंगाशहर।

तुलसी विहार उपाश्रय में आयोजित विशेष प्रवचन कार्यक्रम में उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी, मुनि श्रेयांस कुमार जी तथा खतरगच्छीय मुनि मेहुल कुमार जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। इस अवसर पर जैन एकता को केंद्र में रखते हुए सभी संतों ने अपने प्रेरणादायी विचार प्रस्तुत किए।

मुनि कमल कुमार जी ने कहा कि वर्तमान समय में जैन एकता की अत्यंत आवश्यकता है। एकता से ही समाज में सौहार्द बढ़ेगा और आने वाली पीढ़ी पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। आपसी खींचातानी किसी के हित में नहीं होती। मुनिश्री ने संतों से मिलकर प्रसन्नता की अनुभूति व्यक्त करते हुए कहा कि हमें मर्यादाओं में रहते हुए एक-दूसरे के गुणों को देखना चाहिए, न कि कमियों को। तेरापंथ प्रबोध के एक पद्य का संगान करते हुए उन्होंने जैन एकता को सौहार्द का प्रथम बिंदु बताया और कहा कि यदि हम आपस में स्नेहपूर्वक मिलें, तो श्रावक-श्राविकाएं भी अपने आप जुड़ जाएंगे। मुनि मेहुल कुमार जी ने कहा कि यह उनके लिए प्रथम अवसर था जब उन्होंने तेरापंथी संतों के साथ लंबी वार्ता की, जिससे उन्हें बहुत कुछ सीखने और समझने का अवसर मिला। उन्होंने कहा कि पानी भले ही एक ही कुएं का हो, पात्र अलग-अलग हो सकते हैं, परंतु पानी के स्वाद में कोई अंतर नहीं होता। इसी प्रकार हम सब जैन हैं, भले ही सम्प्रदाय या गच्छ अलग-अलग हों, हमारा लक्ष्य एक ही है—आध्यात्मिक उन्नति। मुनि श्रेयांस कुमार जी ने अपने मधुर काव्यपाठ से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस दिवस का प्रातःकालीन प्रवचन सूरजमल दुग्गड़ के निवास स्थान पर हुआ, जबकि बोथरा भवन में ग्यारह रंगी का विधिवत शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम के दौरान अणुव्रत समिति के नव-निर्वाचित अध्यक्ष करणीदान रांका ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों के लिए ज्ञानवर्धक पिकनिक का आयोजन

यशवंतपुर।

तेरापंथ सभा के तत्वावधान में ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों के लिए एक ज्ञानवर्धक पिकनिक का आयोजन किया गया। बच्चों को मेडलैब-साइंस पार्क ले जाया गया, जहां उन्होंने विभिन्न शैक्षणिक और मनोरंजक खेलों का आनंद लिया। पंकज मेहता एवं डॉ. रुचि मेहता ने बच्चों को खेलों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि ज्ञानशाला से आत्मिक विकास के साथ-साथ बौद्धिक विकास भी होता है।

सभाध्यक्ष सुरेश बरड़िया एवं मंत्री अनिल दक ने बच्चों को प्रोत्साहित किया और प्रशिक्षक बहनों के समर्पित श्रम की सराहना की। तत्पश्चात गंगाम्मा सर्कल स्थित पुखराज और राजेश बोहरा के निवास स्थान पर बच्चों ने साध्वी सोमयशा जी के दर्शन और सेवा का लाभ लिया। साध्वीश्री ने बच्चों को प्रेरित करते हुए कहा कि छोटी-छोटी यात्राएं बड़े लक्ष्यों की ओर ले जाती हैं। उन्होंने विनम्रता बनाए रखने और देव-गुरु-धर्म में श्रद्धा रखने का संदेश दिया।

साध्वी डॉ. सरलयशा जी एवं साध्वी ऋषिप्रभा जी ने बच्चों से संवाद करते हुए ज्ञानशाला के महत्व को समझाया और अनुशासन में रहने की प्रेरणा दी। पुखराज एवं भाग्यवंती बोहरा परिवार ने बच्चों को उपहार भेंट किए। निशा बोहरा एवं गंगाम्मा सर्कल के बच्चों को ज्ञानशाला से जुड़ने के अपने अनुभव साझा किए। इस पिकनिक की सफलता में प्रशिक्षक बहनों का विशेष सहयोग रहा। कुल 45 बच्चों की सहभागिता इस आयोजन में रही।

आत्म ज्योति जगाने का समय है चातुर्मास

सरदारपुरा, जोधपुर।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या 'शासनश्री' साध्वी सत्यवती जी आदि ठाणा-4 का मंगल चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हुआ।

इस अवसर पर 'शासनश्री' साध्वी सत्यवती जी ने कहा कि हम रिटेल व्यापारी हैं, जिसके थोक व्यापारी युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी हैं, जिनकी प्रेरणा हमें केवल चौमासा ही नहीं, अपितु सदा के लिए अध्यात्म से जुड़े रहने व पंचनिष्ठा में अव्वल रहने हेतु मार्ग प्रशस्त करती है। चारों ओर प्रवेश का यह मौसम जनमेदिनी के मन को झकझोर रहा है और पंक्तिबद्ध यह प्रवेश युगनायक, गणनायक के प्रति समर्पित संघ की सुषमा को वृद्धिंगत कर रहा है। जिस प्रकार हर मौसम, हर ऋतु अपने-अपने रंग बिखेरती है, नए पत्र-पुष्पों के द्वारा सबमें अपनी खुशियां भरती है, नव उजास भरती है, ठीक उसी प्रकार आस्था व भक्ति का यह चातुर्मास का मौसम सबको अध्यात्म की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है।

आत्मज्योति जगाने के इस समय की महत्ता समझाते हुए साध्वी शशिप्रज्ञा जी ने कहा कि चातुर्मास हेतु साधु-साध्वियों का आगमन होता है, जो जन-जन में संयम की ज्योति जगाने का प्रयास करते हैं। वहीं साध्वी पुण्यदर्शना जी ने कहा कि यह अवसर तिन्नाणं तारयाणं का समय है, जो चारों तीर्थों में नव उजियारा बनकर मार्ग को अग्रसर करता है। प्रवेश के इस अवसर पर अपने भावों को व्यक्त करने के लिए सभा अध्यक्ष सुरेश जीरावला, उपाध्यक्ष दिनेश कोठारी, शहर सभा अध्यक्ष मूलचंद तातेड़, तेयुप अध्यक्ष मनसुख संचेती व महिला मंडल मंत्री चेतना घोड़ावत उपस्थित रहे।

इस अवसर पर जनकल्याण हेतु 17 सितंबर को आयोजित होने वाले रक्तदान शिविर के बैनर अनावरण के अवसर पर पूर्व महापौर, नगर निगम जोधपुर व अखिल भारतीय लघु उद्योग भारती के अध्यक्ष घनश्याम ओझा ने बैनर का विमोचन कर रक्तदान की उपयोगिता को दर्शाने का प्रयास किया।

कार्यक्रम का प्रारंभ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ एवं कुशल संचालन सभा मंत्री महावीर चौपड़ा ने किया।

परिवार प्रबोधन कार्यशाला में पाया संस्कार और सौहार्द का संदेश

बालोतरा।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में महावीर कॉलोनी के सुरम्य हॉल में लघु उद्योग भारती के तत्वावधान में 'परिवार प्रबोधन कार्यशाला' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जैन एवं जैनेतर समाज के सैकड़ों भाई-बहनों ने भाग लिया।

कार्यशाला को संबोधित करते हुए साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि आज आरएसएस की इकाई लघु उद्योग भारती द्वारा परिवार प्रबोधन कार्यशाला का आयोजन प्रशंसनीय पहल है।

उन्होंने कहा कि परिवार एक वीणा के समान है — यदि उसके तारों को ठीक से साध लिया जाए, तो वह अद्भुत संगीत उत्पन्न करता है, जो अनुपम शांति और आनंद प्रदान करता है। लेकिन यदि इन तारों का सामंजस्य न हो, तो ध्वनि विकृत हो जाती है और घर का वातावरण अशांत हो जाता है।

साध्वीश्री ने कहा कि यदि परिवार के सदस्यों में सौहार्द, सामंजस्य, समन्वय, समता, सरलता, सकारात्मकता और संस्कार रूपी सात सुर होंगे, तो परिवार रूपी वीणा से सुमधुर जीवन संगीत अनुगुंजित होगा। उन्होंने यह भी कहा कि परिवार में तालमेल आवश्यक है, बिना इसके खुशहाली का सपना साकार नहीं हो सकता। परस्पर प्रेम, मधुर संवाद, विनम्र स्वभाव और सभ्य भाषा से ही जीवन में समरसता आती है और घर-आंगन आनंदमय हो जाता है।

साध्वी कर्णिकाश्रीजी ने कहा कि परिवार वह प्यार भरा घोंसला है, जहां दिनभर की थकान के बाद पंछी को विश्राम मिलता है। यह रसमयी धरती है, जहां हर बीज को फलने-फूलने का अवसर मिलता है।

साध्वी मैत्री प्रभा जी ने मंच संचालन करते हुए कहा, 'अगर पति समझदार हो तो मकान बनता है, पत्नी समझदार हो तो घर बनता है, और यदि बच्चे समझदार हों तो घर मंदिर बन जाता है।'

इस अवसर पर लघु उद्योग भारती के प्रदेशाध्यक्ष शांतिलाल बालड़ और अध्यक्ष महेन्द्र श्रीमाल ने भी विचार व्यक्त किए। बालोतरा सभा के मंत्री प्रकाश बैद मुथा ने मंगल संगान किया।

बोलती किताब

समाज-व्यवस्था के सूत्र

सूर्य की दो अवस्थाएँ हैं। वैसे ही हमारे मन की भी दो अवस्थाएँ हैं। सूर्य की उत्तरायण अवस्था उग्रता, तेजस्विता और दीप्ति की अवस्था होती है और उसकी दक्षिणायन अवस्था मंदता, जड़ता और शिथिलता की अवस्था होती है। इसी प्रकार मन की भी दो अवस्थाएँ होती हैं। एक है तेजस्वी अवस्था और दूसरी है शिथिल या मन्द अवस्था। मन में जब तपस्या करने की वृत्ति जागती है तो यह हमारे मन की उत्तरायण अवस्था है। और जब आलस्य, प्रमाद और नींद की वृत्ति जागती है तो यह हमारे मन की दक्षिणायन अवस्था है। मन का दक्षिणायन है रात और उत्तरायण है दिन। दिन में मन जितना सुप्त रहता है उतना शायद रात में नहीं रहता।

मनुष्य समाज में जीता है। समाज में जीने का अर्थ है समस्या में जीना। समाज एक समस्या भी है और एक समाधान भी हैं अनेक लोगों का होना एक समस्या है, पर समाधान भी है। प्रत्येक आदमी दो आयामों में जीता है—बाहर में जीता है। और भीतर में जीता है। भूख लगती है भीतर में और खाता है बाहर में। धन, अनाज, पैसा—सब बाहर से आता है, पर माँग होती है भीतर से। एक है माँग का जगत् जो भीतर में है, और दूसरा है पूर्ति का जगत् जो बाहर में है। माँग भीतर से उठती है और उसकी पूर्ति बाहर से होती है। ये दो आयाम हैं। इन दो आयामों में जीने के कारण समस्या और अधिक जटिल बन गई है।

जब तक इच्छा की प्रेक्षा नहीं की जाती, उस वृत्ति की प्रेक्षा नहीं की जाती, तब तक आर्थिक समस्या का समाधान होना असम्भव है। पता नहीं, मनुष्य की क्या मनोवृत्ति है कि वह एक पक्षीय चिन्तन करता है। आज के अर्थशास्त्री, समाजवादी और राजनयिकों ने कहा—आर्थिक व्यवस्था में परिवर्तन जब तक नहीं होगा, तब तक गरीबी का समाधान नहीं होगा। धार्मिक नेताओं ने बलपूर्वक कहा। कि जब तक धर्म का आचरण नहीं होगा, तब तक समाधान नहीं मिलेगा, आर्थिक समस्या भी नहीं सुलझेगी।

आज प्रत्येक व्यक्ति व्यापारी है। उसका दिमाग व्यावसायिक है, फिर चाहे वह राजनीति के क्षेत्र में हो, सामाजिक क्षेत्र में हो या धार्मिक क्षेत्र में हो। आज संन्यासी को भी सम्पत्ति के आधार पर आँका जा रहा है। कहा जाता है—अमुक संन्यासी के पास इतने अरब रुपयों की सम्पत्ति हैं और अमुक के पास इतनी। कितनी विडम्बना! ऐसी स्थिति में किसको व्यापारी कहें और किसको न कहें? लगता है संसार का प्रत्येक वर्ग व्यापारी है, आर्थिक दृष्टिकोण से सोचने वाला है। विवेक के अभाव में मनुष्य ने एक ऐसी संस्कृति को जन्म दे दिया है। जो उसे ही निगलने को तैयार हो रही है। ऐसी संस्कृति को जन्म देना तो शक्य था पर करणीय नहीं था, क्योंकि आज निगले जाने का परिणाम उसे ही भुगतना पड़ रहा है।

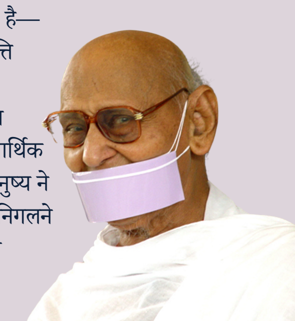

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

पृष्ठ 1 का शेष

लोक में सबसे उत्कृष्ट...

भारतीय दर्शन में चिंतामणि रत्न, कल्पवृक्ष और कामधेनु को दुर्लभ कहा गया है। तुलसीदासजी ने संत समागम और हरिकथा को दुर्लभ बताया है। पूज्यवर सूरत, सौराष्ट्र, कच्छ और उत्तर गुजरात की यात्रा करते हुए अब अहमदाबाद पधारे हैं। वे भावनात्मक और नैतिक चेतना के साथ मूल चेतना जगाने के लिए पधारे हैं। आचार्यप्रवर का यह चातुर्मास मंगलमय हो।

गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने अपने वक्तव्य में कहा — 'आज गुजरात के लिए सौभाग्य का दिन है कि पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी का चातुर्मास हमारे प्रदेश में प्रारंभ हो रहा है। संतों का जीवन परोपकारमय होता है।

चातुर्मास आत्मिक विकास का अमूल्य समय है। आचार्यश्री के सान्निध्य में हमें जिज्ञासाओं और शंकाओं का समाधान मिलेगा। धर्म ऐसा होना चाहिए जो मनुष्य को सुख, शांति और आत्म-उत्कर्ष की ओर ले जाए।'

राज्यपाल महोदय ने आगे कहा — 'प्राचीन काल में हमारे देश में जो ऋषि-मुनि हुए, उन्होंने आत्मा की उन्नति के आठ नियम बताए — उनमें यम आत्म-कल्याण का मुख्य सूत्र है। पांच महाव्रत, जो जैन धर्म के मूल सिद्धांत हैं, वे किसी का विरोध नहीं करते। हर प्राणी के प्रति दया, मैत्री और करुणा का भाव हो। हिंसा आत्मा की उन्नति में बाधा है।

आचार्यश्री ने 60,000 किमी से अधिक की पदयात्रा कर जन-जन में चेतना जगाई है। उनका जीवन पथदर्शन देने वाला है। केवल धर्म ही मनुष्य को पशु से अलग करता है। पैसे से धर्म नहीं होता, धर्म तो स्वानुशासन से होता है। गंगा स्नान से पाप नहीं धुलते, हमारे कर्म ही हमारे सुख-दुःख का कारण होते हैं। धर्म, अर्थ और काम करते हुए मोक्ष की ओर बढ़ें। जिसने अध्यात्म पा लिया, उसने सब कुछ पा लिया।'

राजकुमार पुगलिया ने राज्यपाल का परिचय दिया और अरुण बैद ने आभार ज्ञापन किया। प्रअहमदाबाद चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष अरविंद संचेती, मंत्री उम्मेदकुमार बैद, स्वागताध्यक्ष भैरूलाल चोपड़ा, अहमदाबाद सभा अध्यक्ष अर्जुनलाल जैन ने आचार्यश्री के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल और तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा स्वागत गीत की प्रस्तुति दी गई, वहीं ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने भावपूर्ण अभिव्यक्ति से आराध्य चरणों का स्वागत किया।

अंत में राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का कुशलता पूर्वक संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

पृष्ठ 19 का शेष

वचन के प्रहारों को...

समृद्धि दो प्रकार की होती है - धन-पदार्थ से समृद्ध और अध्यात्म से समृद्ध। पदार्थ जगत का सुख बाह्य सुख है। अध्यात्म से जो समृद्ध है, वह भीतरी सुख है। दोनों सुखों में अंतर होता है। पदार्थ का सुख क्षणिक होता है, जबकि अध्यात्म की समृद्धि का सुख स्थायी होता है, परम आनंद में ले जाने वाला होता है। हमें दोनों परिस्थितियों में समता में रहने का प्रयास करना है। पूज्यवर के स्वागत में ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं तथा तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम-अहमदाबाद से जुड़ी महिला सदस्यों ने पृथक्-पृथक् गीत का संगान किया। स्थानीय तेरापंथी सभा के उपाध्यक्ष ललित सालेचा, उपासक प्राध्यापक डालमचन्द नौलखा, सूरजकरण बोथरा, सुनीता बांठिया, विजयराज संकलेचा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। विजय कुमारी लुणिया ने पूज्यवर से अठाई का प्रत्याख्यान स्वीकार किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

कार्यकर्ता सम्मान समारोह आयोजित

हैदराबाद।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ महिला मंडल हैदराबाद का कार्यकर्ता सम्मान समारोह डी.वी. कॉलोनी स्थित तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। अध्यक्षा कविता आच्छा ने उपस्थित संरक्षिका बहनों, परामर्शक बहनों, कार्यकारिणी सदस्यों एवं मंडल सदस्याओं का आत्मीय स्वागत एवं अभिनंदन किया। उन्होंने कहा कि तेरापंथ महिला मंडल एक धर्मनिष्ठ विशाल वटवृक्ष है, जिसकी सक्रियता, सेवा और समर्पण राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा के नेतृत्व में प्रभावी रूप से गतिमान है। उन्होंने बताया कि केंद्र द्वारा निर्देशित सभी गतिविधियों का समयबद्ध, उत्साहपूर्ण एवं समर्पित समायोजन किया जाता है, जिसमें प्रत्येक सामायिक जोन की बहनें और विभागीय संयोजिकाएं अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

कार्यकाल के दौरान किए गए समर्पण एवं सेवापूर्ण कार्यों के लिए सभी सदस्यों को अध्यक्षा कविता आच्छा एवं मंत्री सुशीला मोदी द्वारा सम्मानित किया गया। सम्मान समारोह का संचालन मंत्री सुशीला मोदी ने भावपूर्ण मुक्तकों के माध्यम से किया, जहाँ प्रत्येक सदस्य पर विशेष मुक्तक प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम में लगभग 200 महिला शक्ति की गरिमामयी उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
14 जुलाई - 20 जुलाई, 2025

जहां सरलता, वहां होता है पवित्रता का निवास : आचार्यश्री महाश्रमण

मोटेरा, अहमदाबाद।
4 जुलाई, 2025

जनोद्धारक पूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी सप्तदिवसीय शाहीबाग प्रवास सम्पन्न कर मोटेरा पधारे। पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए पूज्यवर ने फरमाया कि शास्त्र में निर्वाण को प्राप्त करने की बात कही गई है। निर्वाण को कौन प्राप्त कर सकता है? जिसके जीवन में, आत्मा में धर्म होता है, वह व्यक्ति निर्वाण प्राप्त करने वाला बन सकता है।

दूसरा प्रश्न है, धर्म किसके जीवन में हो सकता है? जो शुद्ध होता है, उसके जीवन में धर्म ठहरता है। तीसरा प्रश्न है कि शुद्ध कौन होता है? जिसे शोधि प्राप्त होती है, ऋजुभूत को शोधि प्राप्त होती है। सरलता के बिना शोधि का होना कठिन है। जो सरल होकर प्रायश्चित को स्वीकार कर उसका पालन कर लेता है, उसे शोधि प्राप्त हो जाती है। आत्मा को शुद्ध करना है तो प्रायश्चित प्रदाता से दोष नहीं छिपाना चाहिए।

सरलता और सच्चाई का संबंध है। सच्चाई की साधना करनी है तो सरलता और निर्भीकता चाहिए। बाहर वही प्रकट हो जो भीतर है। बच्चे जैसी सरलता हो। सरलता के साथ समझदारी भी हो। ईमानदारी का एक निवास स्थान सरलता हो सकती है। हमारे जीवन में प्रामाणिकता और ईमानदारी हो। किसी के साथ धोखाधड़ी न हो। जीवन में निर्लोभता रहे। गलत व्यवहार पाप कर्म का बंध कराने वाले होते हैं। हमें इनसे बचने का प्रयास करना चाहिए।

जुबान से व्यक्ति को झूठा आरोप नहीं लगाना चाहिए। माया भी जीवन में नहीं होनी चाहिए। माया और मृषा का संबंध है। झूठ बोलने वाले पर विश्वास नहीं किया जा सकता। साधु के लिए तो यह वर्जनीय है। छद्मस्थ है, गलती हो सकती है, पर सरल बनकर प्रायश्चित स्वीकार कर लिया जाना चाहिए।

"भूल छिपाना पाप है, करो निवेदन साफ।
यहां बचोगे, पर नहीं, आगे होगी माफ।।"

पूज्यवर ने आगे कहा — गलती हो जाए तो उसे स्वीकार करो, वापस झूठ बोलकर दूसरी गलती मत करो। जहां सरलता है, वहां पवित्रता का निवास हो सकता है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि हर व्यक्ति जीवन में सफलता प्राप्त करना चाहता है। सफलता प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण बात है — शांति। जब व्यक्ति के जीवन में शांति होती है, तब वह सफलता प्राप्त कर सकता है। विकास के लिए शांति की आवश्यकता है। बाह्य जगत में शांति नहीं मिल सकती। स्थायी शांति को प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को भीतरी जगत की यात्रा करनी होगी। प्रतिक्रिया से शांति भंग हो सकती है। विरले व्यक्ति होते हैं जो प्रतिक्रिया की स्थिति में भी शांति से जीना जानते हैं।

भौतिक इच्छाओं का परिसीमन करें, आध्यात्मिक विकास का नहीं : आचार्यश्री महाश्रमण

शाहीबाग, अहमदाबाद।
3 जुलाई, 2025

सप्तदिवसीय शाहीबाग प्रवास के अंतिम दिन जिनशासन के भास्कर शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि व्यक्ति के भीतर इच्छा होती है। मन है तो इच्छा आसानी से उभर सकती है। इच्छा या विवेक होता है तब व्यक्ति प्रवृत्तिमान बन सकता है। इच्छा में परिष्कार हो जाए। असद् इच्छा न हो, सद् इच्छा, अच्छी इच्छा हो। सेवा की भावना सद्इच्छा हो जाती है। संतोष करना भी अच्छा है, परंतु सब जगह संतोष करना अच्छा नहीं है। साधु को तो आहार मिले या न मिले, फिर भी दुःखी नहीं बनना चाहिए। मिला तो शरीर को पोषण, न मिला तो तप को पोषण। दोनों स्थिति में संतोष और समता में रहना चाहिए। गृहस्थ को धन प्राप्ति में संतोष करना चाहिए, परंतु ज्ञान प्राप्त करने में संतोष नहीं करना चाहिए।

सामने चातुर्मास है। साधु-साध्वियां अधिक से अधिक स्वाध्याय में संलग्न रहें। 'शासनश्री' मुनिश्री धर्मरुचिजी साहित्य संपादन में अच्छा समय दे रहे हैं। उनके कार्य की सक्रियता बनी रहे। गुरुदेव तुलसी के जीवनवृत्त एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के जीवनवृत्त लेखन का कार्य चल रहा है। अभी स्थिरता का समय है, पढ़ने, ज्ञान प्राप्त करने और अध्ययन का प्रयास करें। प्रेक्षाध्यान के प्रयोग चलते रहें। जप करने में भी संतोष नहीं करें। गृहस्थ को साधु के दान देने में भी संतोष नहीं करना चाहिए।

व्यक्ति को भौतिक इच्छाओं का परिसीमन करना चाहिए तथा आध्यात्मिक इच्छाओं को यथासंभव पुष्ट करने का प्रयास करना चाहिए। इच्छा तो आकाश के समान अनंत होती है। संतोष परम सुख है। चातुर्मास में पुरुषों और बहनों की ज्ञान की कक्षाएं चलें। ज्ञानशालाओं का क्रम भी अच्छा चले। निरंतर विकास करते रहें।जीवन में भी कहीं कमियां हैं तो उनका परिष्कार करने का प्रयास करें। परिष्कार करने से अच्छाई आ सकती है।

तपस्या भी हो। आचार्य श्री भिक्षु का 300वां जन्म दिवस आ रहा है। 8-9-10 जुलाई को तेले की तपस्या करने का प्रयास करें। फिर अनुकूलता रहे तो और आगे बढ़ें। मुनि राजकुमारजी, मुनि अजीतकुमारजी एवं मुनि मदनकुमारजी भाइयों में तपस्या की प्रेरणा देते रहें।

मंगल प्रवचन के उपरान्त आयोजित 'शासनश्री' मुनिश्री रविन्द्रकुमारजी की स्मृति सभा में पूज्यवर ने फरमाया कि मुनिश्री रविन्द्रकुमारजी का मेवाड़ के पदराड़ा में देहावसान हो गया। पूज्यवर ने मुनिश्री का सक्षिप्त परिचय दिया और उनकी आत्मा के ऊर्ध्वारोहण के लिए चतुर्विध धर्मसंघ के साथ चार लोगस्स का ध्यान कराया।

मुख्यमुनिश्री महावीरकुमारजी, साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी, मुनि मदनकुमारजी, मुनि ध्यानमूर्तिजी ने भी मुनिश्री रविन्द्रकुमारजी के प्रति अपनी आध्यात्मिक मंगल भावना अर्पित की। मुनिश्री रविन्द्रकुमारजी के भाई एस. के. जैन, कमलेश छाजेड़ ने भी अपनी भावना व्यक्त की।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

पदार्थों का उपयोग करते हुए भी उनके प्रति ना हो आसक्ति : आचार्यश्री महाश्रमण

शाहीबाग, अहमदाबाद।
01 जुलाई, 2025

जन-जन के उद्धारक आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में दो तत्व हैं - आत्मा और शरीर, यानी जीव और अजीव। इन दोनों का मिश्रित रूप ही हमारा जीवन है। यह शारीरिक जीवन वही होता है, जहां आत्मा और शरीर मिले होते हैं। कोरी आत्मा है, वहां जीवन नहीं। जैसे सिद्ध आत्माएं शुद्ध आत्माएं हैं, वे अशरीरी हैं। मृत शरीर है, वहां भी जीवन नहीं, क्योंकि वहां आत्मा नहीं है।

प्रश्न है - मृत्यु क्या है? मृत्यु का अर्थ है शरीर और आत्मा का अलग-अलग हो जाना। शरीर और आत्मा का हमेशा के लिए वियुक्त हो जाना मोक्ष कहलाता है। हम जीवन जी रहे हैं, तो शरीर भी है। शरीर है, तो कितनी चीजें हमें चाहिए। पदार्थों का सहयोग चाहिए, वरना जीवन मुश्किल है। साधु को भी पदार्थों का सहयोग लेना पड़ता है, परंतु मोह, राग नहीं करना, मूर्च्छा में नहीं जाना - यही साधना है। शरीर और आत्मा सत्य हैं, पर दोनों एक नहीं हैं। शरीर अलग है, आत्मा अलग है - यह भेद विज्ञान है।

"आत्मा भिन्न, शरीर भिन्न है, एक नहीं संजोना। है मिट्टी से मिला-जुला, पर आखिर सोना सोना।।"

पदार्थों का उपयोग करते हुए भी उनके प्रति आसक्ति न हो। एक सिद्धांत रहा है - तद् जीव तद् शरीरवाद। जो शरीर है, वह जीव है - यह नास्तिकवाद का विचार है। आस्तिकवाद का सिद्धांत है कि शरीर अलग है, आत्मा अलग है। सामने वाले की बात जब अच्छी तरह समझ ली जाए और वह ठीक लगे, तो उसका खंडन नहीं करना चाहिए। जब अपनी बात को सही मानने की स्थिति नहीं हो और सामने वाले की बात काटने का कोई सक्षम तर्क-आधार भी न हो, तो मौन रहना चाहिए। राजा प्रदेशी ने कुमार श्रमण केशी से चर्चा की, फिर कुमार श्रमण की बात सही लगी, तो उसे स्वीकार भी कर लिया। किसी के साथ तात्त्विक चर्चा हो, तो यह अच्छी बात है। अनेक सम्प्रदाय हैं। एक-दूसरे से मिलना हो, बातचीत हो और यदि कोई बात सही लगे, तो उसे स्वीकार कर लेना चाहिए। मान्यता अलग हो सकती है, पर किसी की बात को समझने के बाद उसका खंडन न करें।

ज्ञान बढ़ाने की हमारी नीति होनी चाहिए। दुराग्रह न हो, आग्रहहीन, गहन चिंतन का द्वार हमेशा खुला रहना चाहिए। आत्मा अलग है, पुनर्जन्म है - यह सिद्धांत मानकर चलना चाहिए। आगे कहीं जाना है, तो धर्म के अच्छे मार्ग पर चलें। अच्छा, साधना-युक्त जीवन जीएं। यदि पुनर्जन्म है, तो आगे का जीवन भी अच्छा हो सकता है। जीवन में साधना, अहिंसा, नैतिकता होनी चाहिए।

चातुर्मास का समय निकट आ रहा है। ज्यादा से ज्यादा तपस्याएं हों। मुनि पारसकुमारजी भी अच्छी तपस्याएं कर रहे हैं। शरीर का हम धर्म की साधना में उपयोग करें। यह मोक्ष-साधना का हेतु है। शरीर, वाणी, मन - ये साधन हैं। हम इनका अच्छा उपयोग करें। स्थिरता और गतिमत्ता - दोनों का अपना-अपना उपयोग हो सकता है। हम आत्मकल्याण की साधना में आगे बढ़ते रहें। हमारे गुरुओं ने कितना कार्य किया है। प्रेक्षा विश्व भारती में दूसरा चातुर्मास होना निर्धारित है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने वहां प्रथम चातुर्मास किया था। हम चातुर्मास का अच्छा लाभ उठाएं।

साध्वीश्री अर्हतप्रभा जी ने भी पूज्यवर की अभिवंदना में अपनी भावना रखी। पूज्यवर के स्वागत में डॉ. धवल डोसी, राकेश सिपाणी, अशोक सेठिया, अहमदाबाद की मेयर प्रतिभा जैन ने अपनी भावनाएं अभिव्यक्त कीं।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अर्हम्

'शासनश्री' मुनिश्री रवीन्द्र कुमार जी का देवलोकगमन

जीवन परिचय

जन्म :	आषाढ़ शुक्ला नवमी, विक्रम सम्वत् 1994, (06 जुलाई 1938) गोगुन्दा
माता-पिता :	दाखा बाई - चानणमलजी भोलावत
दीक्षा :	आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा, विक्रम संवत् 2017, (8 जुलाई, 1960), केलवा।
कठंस्थ ज्ञान :	दसवैकालिक, उत्तराध्ययन, शांत सुधारस, जैन सिद्धान्त दीपिका, कर्त्तव्य षट्त्रिंसिका, नाममाला, कालू कौमुदी, भिक्षुन्याय कर्णिका, भक्तामर, शब्द रूपावली, धातु रूपावली आदि ।
अग्रगण्य :	आचार्य श्री तुलसी द्वारा, द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ला अष्टमी, वि. सं. 2037 (8-5-1980)।
'शासनश्री'अलंकरण :	परमपूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी के श्रीमुख से, राजलदेसर में।
विशेष :	अवधान, जन सम्पर्क, अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, यात्रा आदि में विशेष रूचि।
साहित्य सृजन :	(1) अंधकार से प्रकाश (काव्य राजा परदेशी) (2) कविता कानन (3) अमृतगीत (4) तुसी जान दे हो (पंजाबी भाषा)।
देवलोकगमन :	30 जून 2025, पदराड़ा, मेवाड़ में।

वचन के प्रहारों को सहने वाला बन सकता है पूज्य : आचार्यश्री महाश्रमण

शाहीबाग, अहमदाबाद।
2 जुलाई, 2025

महावीर वाणी के प्रवक्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन वांग्मय में क्षमा धर्म बताया गया है। दस यति धर्मों में उत्तम क्षमा धर्म है। इसकी आराधना करना आत्म-कल्याण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। शास्त्र में कहा गया है कि वचन के प्रहारों को सहन करो। कठोर शब्द दौर्मनस्य पैदा करने वाले होते हैं। उन्हें सहन करना अच्छी बात है। सहन करना धर्म है, आत्मा के लिए हितावह होता है। सहन करने वाला साधु तो पूज्य होता है।

यदि आदमी का चिंतन प्रशस्त हो जाए, तो कठोर वचनों को भी सहन किया जा सकता है। सहन करने से निर्जरा हो सकती है, कर्म झड़ सकते हैं। साधना की भूमिका हो या व्यवहार की, वचनों को सह लेना अच्छी बात हो सकती है। शांत भाव से सहन करें। शक्ति होते हुए भी मौन रखना और अच्छी बात है। सबके साथ रहते हुए भी सहन करने की शक्ति हो। इसलिए क्षमाधर्म की साधना करनी चाहिए। क्षमा वीर का भूषण है।

क्षमा रूपी खड्ग जिसके हाथ में है, दुर्जन उसका क्या बिगाड़ सकेगा। घास-फूस है तो वहां चिंगारी पड़ने से आग लग सकती है। सूखा मैदान है, वहां चिंगारी पड़ेगी तो भी आग नहीं लगेगी, चिंगारी बुझ जाएगी। सहन करने वाला आराधक हो सकता है। सहन करना तो सुख-शय्या है। क्षांति है, तो उस संदर्भ में शांति मिल सकती है। वचन के प्रहार तो बड़े-बड़े लोगों को भी सुनने पड़ सकते हैं। तथ्यहीन बातों में भी शांति रखें। स्पष्टीकरण हो सकता है। आलोचना-निंदा का जवाब कार्यों से दें। यदि आलोचक की गलतफहमियां दूर हो जाएं, तो वे आपके प्रशंसक भी बन सकते हैं।

कहा गया है– सबको मैं क्षमा करता हूं, सब मुझे क्षमा करें। सब प्राणियों के साथ मैत्री है, किसी के साथ वैर-भाव नहीं है। चित्त समाधि तो हमारे अपने हाथ में है। गुस्सा नहीं करेंगे, तो कर्म कट जाएंगे। जो वचन के प्रहारों को सहता है, वह पूज्य बनता है।

आचार्यश्री के मंगल प्रवचन से पूर्व साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि दो शब्द बड़े प्रसिद्ध हैं - समृद्धि और दरिद्रता। हर व्यक्ति समृद्ध बनना चाहता है। दरिद्रता किसी को भी प्रिय नहीं होती।

(शेष पेज 17 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
14 जुलाई - 20 जुलाई, 2025

आचार्यश्री महाश्रमण : चातुर्मासिक प्रवेश

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।